Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"kZ 14 vad 07 30 tqykbZ 2015 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

आसन बनाम सिंहासन

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

एह स्याह बख्ती तेरी तक्सीर से कायल हैं हम
जिस दुशाले पर नजर की उसको तपड़ कर दिया।।

यानि बूरे वक्त की तकसीर है कि हर काम उल्टा होता है, दुशाला बढ़िया औढ़न भी टाट का तपड़ बन जाता है। भारतीय राजनीति और राजनीतिज्ञ का आचरण इतना घिनौना हो चुका है कि अच्छे से अच्छे कार्य में भी स्वार्थ और घोटाले की बू आती है अन्यथा विपक्ष अपनी ना कामयावी छिपाने और प्रतिपक्ष के हर कृत्य को कालियापूर्ण सिद्ध करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता।

योग युग युगांतर से भारतीय सभ्यता एक अनुपम विद्या के रूप में विख्यात है जिसे आज विश्व भी प्रभावित हो लोहा मानने को मजबूर है लेकिन घर पर इसमें भी राजनीति होने लगी। यह एक व्यायाम विधि है। स्वास्थ्य जीवन का आधार है ना कि एक दिखावा। गत 67 वर्ष तक कांग्रेस का राज रहा किसने योग दिवस मनाने को मना किया था। योग अंतर्राष्ट्रीय मनाने में आज भगवांकरण दिखाई दे रहा है। सन् 1997 में हल्दी की दवाई क्षमता तथा गुणों को देख अमेरिका ने इसे पेंटट करवाने की शुरूआत की तब भारतीयता की याद आई अगर समय रहते कोई पग उठाया जाता है तो हो हल्ला क्यों?

अतंर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाते हुए केंद्रीय सरकार ने सशस्त्र सेनाओं के अनुशासन धर्म की अनदेखी कर डाली। योग दिवस को मनाने की आड़ में सैंकड़ों करोड़ सरकारी कोष से खर्च किया गया और 'इंडिया गेट' पर हजारों सुरक्षा सेनाओं के जवानों को इस सार्वजनिक प्रर्दशन में शामिल किया गया। ''स्वच्छ भारत अभियान'' के प्रथम दिन भी देश की राजधानी में भारतीय सेना से सेनापति द्वारा राजनेताओं को साथ कंधे से कंधा मिलाकर झाडू उठाकर सफाई करना भी दंडवत प्रणाम है क्योंकि सेनापति की उपस्थिति अपने जवानों में ज्यादा उपयुक्त होती है। सरकार की नीति तो पूर्णतया स्वास्थ्यवर्धक है लेकिन प्रशासन द्वारा आवश्यकता से अधिक अपनी सीमा लांघकर दंडवंत होना भी 1975 के आपातकालीन समय में 'परिवार नियोजन' के अंदर हुई ज्यादतियों की याद दिलाता है। शारीरिक तथा मानसिक व्यायाम के मिलने की शुरूआत अच्छी बात है लेकिन किसी व्यक्ति विशेष वो भी एक 'योगी' को ब्रांड एंबेसडर बनाकर वी0आई0पी0 ट्रीटमैंट देना और उसके व्यवसाय की प्रगति सुनिश्चित करना एक विंडबना है जो कि सिंहासन के प्रति दंडवत होना ही है।

आजकल राजनीति एक दिवसीय क्रिकेट मैच बन गई है। एक दिन छक्का लगाने पर वाह-वाह होती है और अगले दिन नई परियोजनाओं की इतिश्री हो जाती है जैसा कि ''स्वच्छ भारत, जगमग भारत, अच्छे दिन, डिजीटल इंडिया, स्किल इंडिया, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और स्वस्थ भारत'' आदि। श्री अरूण जेटली द्वारा शहरी आवास के लिए 8 हजार करोड़ तथा ग्रामीण आवास के लिए 4 हजार करोड़ रूपये की धनराशी आंबटन की घोषणा तो की गई लेकिन व्यवहारिक काम अब तक शुन्य है और अभी अभी घोषित की गई योगनीति का भी यही हश्र हो रहा है।

भारत में विश्वविख्यात योगीराज हुए हैं जिन्होने योग से असाध्य रोगों को निदान किया है। एक स्वस्थ जीवन का आधार दिया है। आज हम इस आस्था को भी अनावस्था में बदलने पर तुले हुए हैं। भारत ने ''विश्व योगा दिवस'' का आयोजन कर विश्व को तो चेता दिया लेकिन करोड़ों रूपये खर्च भी हुए। चीन ने कुछ नहीं किया इसमें भी लाभ कमा लिया। वहां करोड़ों की संख्या में योगा मैट तैयार कर दिए जो विश्व भर की सप्लाई है। यह सस्ते सुंदर मैट हरेक को लुभाएगें। चीन ने इसमें भी रोजगार पैदा कर लिया। आखिर हम ऐसा क्यों नही कर पाते? क्योंकि हमारी राजनीति और मीडिया दोनों ही विकृत हैं। मीडिया निरंकुश है क्योंकि मालिक दुबई, अमेरिका या इंगलैंड में बैठा है और वो अपनी सोच और लाभ हम पर थोप रहा है। एक वक्त 30 मिनट की खबरें लगाकर देखें, 27 मिनट विज्ञापन, एक मिनट मीडिया का अपना गुणगान और केवल दो मिनट की विकृत समाचार। क्या भारत में केवल उल्टा-पुल्टा ही हो रहा है? यह मान्य है कि घोटाले हुए हैं लेकिन प्रगति ने भी नए आयाम स्थापित किए हैं। नए कल-कारखाने लगे हैं, शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित हुए हैं। आज अमेरिका में 38 प्रतिशत डाक्टर भारतीय हैं, 36 प्रतिशत नासा के वैज्ञानिक भारतीय है, 34 प्रतिशत माईक्रोसोफ्ट कर्मी भारतीय हैं, 17 प्रतिशत इंटेल कर्मी भारतीय है। अमेरिका में कार्यरत कुल वैज्ञानिकों में से 12 प्रतिशत केवल भारतीय हैं और फिर भी भारत पिछड़ा है क्योंकि हमारे राजनेता ने यहां भी टांग अड़ाई हुई है क्योंकि आरक्षण के नाम से वे राजनैतिक रोटियां सेंक रहा है जिससे काबलियत का पलायन हो रहा है।

'ks"k i`"B&2 ij

'k"k i`t&1

डा0 हरगोविंद खुराना को पंजाब विश्वविद्यालय में लैक्चरर की नौकरी नहीं मिली और अमेरिकी नागरिकता लेकर जीन की खोजकर नोबेल पुरूस्कार विजेता बने। कल्पना चावला और सुनिता विलीयम अंतरिक्ष वैज्ञानी बनी। ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं। आज जरूररत है सकारात्मक सोच की। योग एक विज्ञान है। इसे राष्ट्रहित में स्वास्थ्य विद्या ही रहने दें। मीन मेख ना निकाल कर राजनति से दूर कर इसका असर विश्व को दिखाएं तथा भारत को विश्व गुरू का रूतबा पुनः दिलायें। हमें अपनी पहचान पुनः जागृत करनी होगी।

इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि जहा राजनीति का दखल होता है, वहीं बंटाधार हो जाता है ज़्योंकि वे इसमें भी क्रेडिट लेने का प्रयास करते हैं तथा विपक्ष सत्यता में भी खामियां निकालने का प्रयास करता है। आज मुस्लिम समुदाय को भड़का दिया कि यो÷ उनके धर्म के विरूद्ध है कुछेक तथ्य पेश हैं कि सूर्य और चंद्र प्रकृति है, किसी धर्म की बपौती नहीं, अपनी सुविधनुसार कोई पूजा करे या सार्वभौमिक प्रकृति माने उसकी अपनी श्रद्धा है। योग को आत्मा का परमात्मा से मिलन भी माना जाता है और स्वस्थ जीवन का आधार भी योग की विद्या में हम आसन के रूप में देखते हैं। आसन जीव के विभिन्न पास्चर से ही लिए गए हैं, बच्चे को कोई आसन सिखाता नहीं लेकिन वह अपनी जरूरत के अनुसार खेलता और चहकता है। ऐसे ही कुछे आसन पशु-पक्षियों की विभिन्न मुद्राओं से ही लिए गए हैं जिनसे शरीर को आराम मिलता है तथा बीमारियों से निदान होता है। मुस्लिम समुदाय नमाज अदा करते वक्त ब्रज आसन में बैठता है उसे वे कोई भी नाम दें, किसी को केाई आपज़ि नहीं, ऐसे ही वे कहां नतमस्तक होता है उसकी अपनी सुविधा और आस्था है लेकिन योग के विषय में भ्रम राजनेता का फैलाया है। प्रबुध मुस्लिम को योग से कोई आपज़ि नहीं है वे ढंग और सुविधा से वही सब कुछ कर रहा है हिंदू औम को मानता है, उसकी बपौती नही है, मुस्लिम अगा की इबादत करता है हर कोई एक नूर देखता है फ़्रि हो-हल्ला किसने और ज़्यो शोर मचाया केवल राजनैतिक रोटियां सेंकी जा रही हैं।

यह सर्वमान्य है कि योग का महत्व निर्विवाद है। इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने हेतू प्रधानमंत्री के प्रयास सराहनीय हैं लेकिन इस दिशा में कारागर कदम उठाने की जरूरत है। इसमें शक नहीं कि पर्यटन मंत्रालय ने देश विदेश में योग दिवस हेतू सामूहिक प्रदर्शन पर 10 करोड़ रूपये खर्च किए तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने भी 5.5 करोड़ रूपये खर्च किए तथा 170 देशों के साथ इस आयोजन का आदान प्रदान हुआ। हालांकि इसका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में राष्ट्र को लाभ मिलेगा नुकसान कोई नहीं अगर इच्छा शक्ति और पार्टी से उपर उठकर कार्य हो तो चीन से सबक लेते। अगर चीन योग मैट बना सकता है, हम योग प्रशिक्षक विश्व को देकर रोजगार के नए आयाम खोल सकते हैं। आज यूरोप में योग 90 बिलियन अमेरिकी डालर का उद्योग बन चुका है इसका लाभ उठाना ही भारत के लिए हितकर होगा अपनी राजनैतिक आकांक्षा थोपने से नुकसान ही होगा।

पश्चिम में योग का बिगड़ता स्वरूप - नग्न योग, रेव योग तथा किकवाज़्सिग योग इत्यादि भिन्नता का विषय है। हिंदु अमेरिकन संस्था ने तो यहां तक कह दिया है कि योग पर किसी की बपौती नहीं है कोई भी इसे अपना सकता है लेकिन इसका आधार हिंदु धर्म पर आधारित है। योग को पेटैंट करवाने हेतू भारतीय मूल के विक्रम चौधरी प्रयास कर भी चुके हैं। अर्चना शर्मा की एक परियोजना में एक डीजिटल लाइब्रेरी स्थापित हो चुकी है जिसमें 1500 आसन विडियो टेप पर उपलज़्ध हैं जो चिर-परिचित चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देगी। दिल्ली में स्थापित मोरार जी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। योग और हर्बल चिकित्सा को ढंग से बेचा जाए तो राष्ट्र आठ बिलियन अमेरिकी डालर अर्जित कर सकता है इस पर भी अगर भगवांकरण का अरोप लगे तो यह राष्ट्र का अहित ही होगा। पतांजली द्वारा संस्कृत सूत्रों में योग की आठ धाराएं इस प्रकार वर्णित की हैं :- यामा (प्रिंसीपल), न्यामा (व्यक्तिगत अनुशासन), आसन (योग मुद्राएं) (व्यायाम), पुर्णायाम (श्वास क्रियाएं), प्रत्यामा (इंद्रियों पर नियंत्रण), धारणा (लक्ष्य), ध्यान केंद्रित करना, समाधि (भक्ति)।

अभी वक्त है कि हम अपनी इस युग युगांतर की धरोहर को संभालें जिसमें सबका भला निहित है। हमारे शास्त्र तो सबका भला मांगते है और कहावत भी है कि ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग निवास करता है''। अच्छी पहल कोई भी करे उसे अपनाएं उसी में अध्यात्मिकता तथा राष्ट्र की प्रगति और विकास है। यही हमारी धारणा है। ''वसुदेव कुटंभकम'' विश्व एक भाईचारा है एक परिवार है योग इसकी महत्वपूर्ण कड़ी है। राजनैतिक मीन मेख से बचे अन्यथ अमेरिका जैसे देश इस महत्वपूर्ण धरोहर को भी पेटैंट के नाम से हमसे छीन ना ले जाएं।

उन्नत भारत अभियान अथवा योग विकसित भारत केवल मात्र 24 घंटे 'मन की बात' प्रसारण से व योग के किसी एक व्यक्ति विशेष द्वारा व्यापारिक प्रसारण से राष्ट्र का भला होना नामुमकिन है। योगिक विकास तभी संभव हो सकता है जब योग पद्धति को समस्त शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में शामिल करके हर स्तर पर योग केंद्र खोलें जाएगें। यही नहीं योग को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रणाली व प्रतियोगिताओं में भी मान्यता दिलाई जानी चाहिए और प्रतिस्पर्धा हेतू हर आयु वर्ग के लिए निरंतर योगिक प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई जानी चाहिए।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरो प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

इन्द्रिय-दमन का अभ्यास जीवन को बहुत शान्त और सहनशील बना देता है। 'अज्ञात'

[krh ij eMjkrk l[k dk [krjk

&Mk- Kku izdk'k fiyk fu;k ¼iwoZ lkaln½

भारत में 1170 मिलीमीटर सलाना औसत बारिश होती है । मानसून पर पूरे वर्ष का अर्थशास्त्र निर्भर करता है। मानसून अच्छा होगा, तो कृषि अच्छी होगी। कृषि अच्छी होगी, तो महंगाई घटेगी। कुल मिलाकर हमारे देश की पूरी अर्थव्यवस्था का आधार मानसून ही है। कमजोर मानसून के कारण सूखे की संभावना, बेचारे किसान के लिए बुरी खबर है। मौसम से जुड़ी जानकारी देने वाली अमेरिकी संस्था 'ऐक्यूवेदर' का पुर्वानुमान है कि भारत में बहुत बड़ा अकाल पड़ने वाला है। एजेंसी का कहना है कि पसिफिक में बहुत बड़े चक्रवाती तूफान सक्रिय हैं, जो मानसून को रोक सकते हैं। ऐक्यूवेदर का अनुमान है कि इसकी वजह से भारत और पाकिस्तान के बड़े हिस्सों की खेती प्रभावित होगी। ऐक्युवेदर के अनुसार अकाल की यह स्थिति अल नीनो प्रभाव की वजह से पैदा होगी। समुद्रतल का तापमान बढ़ता–घटता रहता है। तापमान के बढ़ने की स्थिति अल नीनो कहलाती है। इसकी वजह से औसम तापमान बढ़ जाता है। अल नीनो की स्थिति मजबूत होने से बारिश कम, भारत में सूखे जैसे हालात पैदा हो सकते हैं। मौसम विज्ञानिकों के अनुसार, 65 साल में 16 वर्ष अल नीनो की वजह से कम बारिश हुई। 2002, 2004, 2014 में देश में सूखे जैसे हालात बने रहे। 2009 में अब तक सबसे बड़ा सूखा पड़ा।

केंद्र के मौसम विभाग ने भी मानसून को लेकर पूर्वानुमान जारी किया कि उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में सामान्य की 85 फीसदी बारिश होगी अर्थात सूखा के आसार हैं। पहले ही मार्च–अप्रैल 2015 में हुई बेमौसम बारिश से राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा समेत करीब एक दर्जन राज्यों के किसानों की फसल बर्बाद हो चुकी है। राजस्थान में 64 फीसदी सिंचाई मानसूनी बारिश पर निर्भर है। अब कमजोर मानसून की वजह से धान, मक्का, ज्वार सहित खरीफ की फसलों के उत्पादन पर असर पड़ेगा। वहीं खाद्य वस्तुएं भी महंगी हो जाएंगी। उत्पादन कम होगा, जिससे मांग और पूर्ति का संतुलन बिगड़ने की आशंका है। कमजोर मानसून की आशंका से महंगाई का बम फटना तय है। किसानों व मध्यम आय वर्ग के लोगों के **'अच्छे दिनों'** के मंसूबों पर कमजोर मानसून पानी फेर सकता है। भारत में 2014 में भी, कुल वर्षा 12 फीसदी कम रही। 2013–14 में कृषि जगत की वशद्धि दर 3.7 प्रतिशत रही, जो 2014–15 में घटकर 0.2 प्रतिशत हो गई। राष्ट्र की जीडीपी में कृषि का योगदान केवल 15 प्रतिशत रह गया। परंतु, जब भी देश 60 प्रतिशत आबादी की आजीविका, किसी न किसी रूप में, कृषि क्षेत्र में जुड़ी हुई है। खेत की जोत घटती जा रही है, जिससे प्रति हैक्टेयर उपज कम हो रही है। जनवरी–मार्च तिमाही 2015 में कृषि क्षेत्र की विकास दर सिर्फ 1.4 प्रतिशत रही। 2013–14 में देश में कुल 265.04 मिलियन टन अनाज पैदा हुआ, जो 2014–15 में घटकर 251.12 मिलियन टन हो गया।

कभी मौसम की मार, कभी मानसून की बेरूखी, कभी अतिवशष्टि, कभी अनावशष्टि, कभी ओले, कभी सूखा, भारत में खेती को मानसून का जुआ बना रहे हैं। बेमौसम वर्षा से फसल बर्बाद होने पर उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के हजारों किसान आत्महत्या कर चुके हैं। सन् 2015 के शुरू के पैंतालीस दिनों में केवल मराठवाड़ा में 93 किसानों ने आत्महत्या की है। पिछले वर्ष यहां 569 किसानों ने आत्महत्या की थी। एनसीआरबी के मुताबिक 1995–2013 के बीच, 2,96,000 से ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके हैं। हर साल औसतन 14 से 15 हजार किसान अपनी जान ले रहे हैं। यह घोर विडंबना है कि कृषि प्रधान भारत में आर्थिक समस्याओं से घिरा एक अन्नदाता किसान हर 45 मिनट में खुदकुशी कर रहा है। प्रतिदिन 32 किसान आत्महत्या कर रहे हैं। एक किसान दो बार मरता है। एक बार फसल बर्बाद कर प्रकृति सदमे से मारती है, जो सदमे से बच गए उन्हें पचास, सौ, दो सौ रूपए का मुआवजा देकर ढीठता से व्यवस्था मारती है।

जब तमाम रास्ते किसानों के लिए बंद हो जाते हैं, तभी वे आत्महत्या का बेहद दुखद कदम उठाते हैं पर सरकारी मशीनरी किसानों की सुध लेने के बजाए आंकड़ों की हेरफेर से यह दिखाने की कोशिश करती है कि आत्महत्या करने का कारण फसल बर्बाद होना नहीं था। आज, सरकार और समाज के सामने यह–प्रश्न है कि आखिर कब तक मजबूर होकर अन्नदाता किसान, सल्फास का जहर खाकर या फंदे से लटककर, आत्महत्या करता रहेगा? अमेरिका या यूरोप के किसी भी देश में एक भी किसान ने खुदकुशी की होती तो वहां अब तक भूचाल आ जाता। इनमें से हर एक मौत दुखदायी और शासन को गहरी नींद से जगाने वाली है। इससे तो इंकार नहीं किया जा सकता कि ऐसी स्थितियां आ

गई हैं कि किसानों को अपनी बात कहने के लिए मौत को गले लगाना पड़ रहा है। आत्महत्या करने वाले किसान राजनीतिक तंत्र तक अपनी आवाज पहुचाने की कोशिश करते रहे हैं, लेकिन उनकी मौतें भी संवेदनहीन हो चुकी व्यवस्था को तंद्रा से जगा नहीं सकी। ऐसा लगता है कि सियासत से अब उसका भरोसा उठ चुका है। यह देश के किसान की अंतहीन व्यथा और निराशा का प्रतीक है। आज अन्नदाता मर रहा है, उसे आत्महत्या से बचाने की दिशा में हमारे नीति–निर्माताओं को तत्काल कदम उठाने चाहिएं।

मानसून की बेरूखी से सूखे की आशंका से केंद्रीय सरकार चिंतित है, फिर भी इस बात से आश्वस्त है कि उसका खाद्यान्न भंडार पर्याप्त मजबूत है, और देश में अन्न का संकट नहीं रहने वाला है। लेकिन, पानी के भंडार का क्या होगा? फिर, अन्न के भंडार भरे होने के बावजूद खाद्य वस्तुओं की वितरण व्यवस्था के प्रबंधन को मजबूत करने की जरूरत भी होगी। सरकार के समक्ष यह भी चुनौती होगी कि दलहन और तिलहन की कमी और उनकी बढ़ती कीमतों पर कैसे काबू पाया जाए। दालों के भाव तो अभी से ही आसमान छू रहे हैं और संकट बढ़ने पर इनकी कीमतों का अभी से अंदाजा लगाया जा सकता है। कीमतों के लिहाज से उपभोक्ताओं के हितों के संरक्षण के साथ–साथ उत्पादकों यानी किसानों की मुश्किलों के प्रति भी सरकार को सचेत होना पड़ेगा। कहीं ऐसा न हो कि सूखे की स्थिति में आकलन और दोरों का अंतहीन खेल फिर से चालू हो जाए और नतीजे के तौर पर मामूली रकम के चेक किसानों के जख्मों पर नमक छिड़कते नजर आएं। बेमौसम बरसात के बाद केंद्र समेत अधिकतर राज्य सरकारों ने कुछ ऐसा ही कड़वा अनुभव कराया है। अभी भी लाखों किसानों को मुआवजे के नाम पर कुछ भी नहीं मिला है।

ऑस्ट्रेलिया के मौसम विभाग ने भी कहा है कि भारत के आसपास अलनीनो प्रभाव की पुष्टि होने के कारण स्थितियां खराब होने की आशंका है। अनुमान के अनुसार, अलनीनो प्रभावित इलाके में उत्तर–पश्चिम भारत शामिल होगा, जिससे दिल्ली–एनसीआर, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान आते हैं, और यहां करीब 85 फीसदी वर्षा ही होगी। अभी मौसम के बारे में एक और अनुमान घोषित होने की संभावना है और असली आंकलन उससे हो सकेगा। अनुमान थोड़ा सुखद हो या वर्तमान से भी खराब का हो, सरकार को पहले से ही पूरी तैयारी के लिए कमर कसनी होगी। वैसे, लंबी अवधि में सरकार की परिक्षा इस बात पर भी होगी कि वह खेती को मानसून की मोहताजी से निजात दिलाए।

NEED FOR CREATING AN ARAB SPRING

R.N. MALIK

Our country is crippled with a very bad luck. Initially she remained under the subjugation of Mughals and Britishers for 1400 long years. This is probably the largest period of slavery in the history of any country in the world. Fortunately the existence of the country was not decimated. But indelible scars were left on Indian psyche, its culture and civilization. India became free on 15.08.1947. Sardar Patel did a wonderful job of bringing all the princes under one flag and we got a divided India but still with a very large dimensions. Regular Indian Govt. started functioning in March 1952. The situation after independence is not much better. 63 long years have passed and 30% of our population is still wallowing in tear jerking poverty. An equal number manpower called "marginally poor" is also leading a life of privation and low calorie intake. Only God knows when will Ache Din come for this vast majority. By now India should have been a fully developed nation like China. This is firstly because India is endowed with more natural resources than China. Secondly Chinese economic conditions were worse than India's till 1974 when Deng Xiaoping took over. Now China has become a world power rubbing shoulders with US and India is still mired in a vast sea of poverty. Now who is responsible for this continuing drudgery ?Just think it over.

India was very fortunate in 1947 as a galaxy of highly competent and dedicated people like Mahatma Gandhi, Sardar Patel, Jawaharlal Nehru, Dr. Rajinder Prasad, Maulana Azad were at the helm of affairs (Please compare the self-serving politicians of today with them for a while). Very soon Mahatma Gandhi (the soul of India) was assassinated in January 1948 and the great Sardar died in the December 1950. Still Jawaharlal Nehru did his best to lay the foundations of a modern India. Lal Bahadur Shastri (the embodiment of honesty and morality) remained Prime Minister of India just for 17 months. Mrs. Indira Gandhi became the Prime Minister in January 1966. She was not the undisputed leader of the party and the politics of intrigues and manipulations started from that point of time. She started subverting the democratic institutions one-by-one. The biggest blow came on the head of Judiciary when three judges of the Supreme Court were superseded to promote Justice A.N. Ray as the next Chief Justice of India in March 1973. Indian judiciary never recovered from that blow to regain its pristine glory. However three big decisions go to her credit - creation of Bangladesh, population control and release of money to the villages for construction of roads and electrification.

The rule of Janta Party for 2-years (1977-1979) was a complete disaster. The period under V. P. Singh & Chander Sheakher as Prime Ministers was equally disastrous. Financial position of India at that time was the same as that of Greece now. India had to mortgage 40 tons gold in the Bank of England to take a rescue loan from IMF. IMF in turn, compelled Narsimah Rao Government to introduce economic reforms and end the License Raj. The reforms brought the desired results. But dirty politics still continues with increasing virility.

An environment of great hope and aspirations was built when Narender Modi came on the national scene in Nov.2013. He had built (rather orchestrated) his image as a game changer (Gujrat is ahead of other states only in respect of providing 24 hrs electricity and water supplies. In health parameters, even Bihar is ahead of Gujrat). The 2014 election was fought like the U.S. presidential election. People voted for Narender Modi (and not BJP) and BJP won the election with a thumping majority. Even highly undeserving candidates won their seats with big margins. Narender Modi formed the Government and took the oath as Prime Minister of India on 26.5.2014 with great fanfare and showbiz.

One year has passed and the new Government has not been able to cut much ice. The wonderful Swachh Bharat Abhiyan has been put on the back burner. The progress in infrastructure development is not visible at all. We do not know how many kms of National Highways are being built per day. There is no appreciable progress in the rate of GDP growth. The exports have dwindled in the first two months of this fiscal year by 9%. The recession in the industrial sector still continues. The Foreign Minister and the Chief Minister of Rajasthan have been caught committing unforgivable improprieties. The Vyapam scam is already hitting the headlines. The allegations of corruption against the ministers are impinging on the minds of the people. The eloquent silence of the Prime Minister on these murky affairs is mystifying. He has also burnt his fingers in the Lalit-gate affair while saving the two errant ministers. Also the Prime Minister has not framed the road map of economic development and presented it before the nation even after a lapse of one year.. To make matters worse, he scrapped the Planning Commission and replaced it with effete 'NITI AYOG'. There is no talk of population control which is the sole cause of all economic and social ills facing the country (We are adding one Australia every year). Money is being spent on populist projects as before. NPAs are rising in the balance sheets of Indian Banks-a sure way towards Greek tragedy. It is now certain that one year honeymoon period of the Modi government is over. Dr. Amritya Sen (Nobel laureate) says" The P.M. does not understand economics". Chester Bowles, the then U.K Ambassador to India had made a similar remark about Jawahar Lal Nehru in 1960

Now everybody feels the return of bad old days. The situation is gradually coming closer to the one that prevailed in 1973 when JP movement made its start in Bihar. Like Modi, Mrs Indira Gandhi had swept the 1971 elections on the slogan of "Garibi Hatao". Her stock went still higher when India achieved remarkable victory over Pakistan in 1971 war. But soon people started losing faith in her leadership because the economic problems were becoming insoluble and they started following JP's movement. Rest is history. Likewise Modi Government is also failing on the economic and employment fronts. Now people in general and aspirational youth in particular are thoroughly disillusioned. They are fully convinced that all political parties are alike and there is no difference between them to speak for. They have also realized that this confiscatory, predatory and cantankerous tribe of Indian politicians is ruling and ruining the country for the last five decades. But they do not know how to get the country rid of their stranglehold. They have already rejected the Congress. BJP did not come up to their expectations. They do not know where to go? Now they are standing at the cross-roads.

Winston Churchill once said "A statesman thinks of the next generation while a politician thinks of only the next election." Another apt definition of a politician is," He changes colours like a chameleon. At times he is nationalist too" All political parties without exception are grossly engaged in the vote-bank politics. Two utterly retrograde bills i.e. Land Acquisition Bill 2013 and Food Security Bill were passed without demur at the fag end of the term of UPA Government just to sway the voters in favour. The job of the Opposition parties has become simply to oppose every move(good or bad) of the ruling party with a fixed gaze at the polls. Look at how mindlessly the Congress party is opposing the amendment of the new Land Acquisition Act 2013. Acquisition of land under the new Act has become almost impossible even for constructing a bye-pass road around a township. In the UPA government, Mamta Bannerjee sacked the Railway Minister from her party when he proposed marginal hike in the railway fares and the UPA government remained a silent spectator. As a Railway Minister she operated from Kolkata and TA bills of officials to take and bring files back to Delhi amounted Rs.11.0 lac per month. The debates in the Parliament and State Assemblies have become a mud-slinging match among the MPs and MLAs. Even otherwise there is a constant war of attrition between the ruling and Opposition parties for all the five years. We have never heard a good speech by any MP dealing with serious issues of economic development for a long time. Adjournments have become the order of the day. People say that Khap Panchayats deliberate in the open in a more orderly manner than the MPs and MLAs in the House. When the House was not allowed to function by the Opposition parties in the past and the MPs were still paid the emoluments for the closure period. All MPs and MLAs start behaving like real brothers when they have to pass the proposals for enhancing their emoluments. The

proposal to increase their salaries and perks by 200% is on the anvil. Presently there are many MLA's and MP's who are getting pension more than Rs. 2 lakh per month. Even the tension of the Cabinet Secretary of is half of that amount. Rajya Sabha was created to accommodate people of repute and erudition. Now Rajya Sabha has become a Goshalla for those who cannot make it to Lok Sabha. George Fernandez could not recognize Arun Jaitley when the later went to congratulate him for his election to the Rajya Sabha. Earlier Dinesh Singh was elected likewise when he was too old to move without a wheelchair. Many uneducated persons have represented Haryana in the Rajya Sabha in the past. Post of Governor has been reserved for very old politicians. For the politician only party interests are supreme with no concern for the nation. His mindest is "People go on barking and the political caravan goes on for next five years." This is the greatest bane of Indian political and democratic system.

The political class coaxed the Bureaucracy to fall in line and indulge in corruption with mutual inclusiveness (collateral corruption). For example, the previous Chief Minister opened the "Employment Exchange for retired IAS officers" in Haryana during his incumbency. Recently the Govt. cancelled the recruitment process of 7000 constables without giving any cogent reason though the recruitment process had been extremely fair and had gone upto an advanced stage. The Police Recruitment Board had spent Rs.11.0 crore during the process. The Chief Ministers by and large have become the regional satraps and treat the States as their personal fiefs. Recently 11 CM's did not attend the meeting of NITI AYOG presided over by the PM. They have openly and flagrantly flouted the authority of the PM and it amounts to failure of constitutional machinery. They have raised big family trees. Recently Mr P S Badal taunted his relative at a convocation, saying, " I have made you the Chairman of the Governing Council, your son as the Cabinet Minister, your daughter as the Cabinet Minister at the Centre and your son-in-law as the Deputy Chief Minister of Punjab". The situation in Punjab is horrible. The CM family runs a big bus service ignoring the principle of "conflict of interests". A retired Inspector General of Police filed a PIL in Punjab and Haryana High Court stating that a drug racket of Rs.6000 crore is operating in the State. The result is that 80% boys and 30% girls in rural Punjab are using drugs. The fact of the matter is that this trioka of political class, bureaucracy and the corporate world are working in tandem as a parasite for self-aggrandizement. They spend public money in a highly profligate manner. For example the present Chief Minister of Andhra Pradesh spent Rs. 100 crore on renovation of his office and residence. Delhi Government has passed the budget of Rs. 520 crore for self publicity. Most of the money will go to TV channels. This is a sleek way of bribing them. Most leaders travel by chartered planes. The fence is now eating the crop and the farmer is unable to protect it. Now he has raised his hands in utter despair. The scale of corruption is almost touching the sky. Most of the politicians and government servants have become super rich by adopting hi-tech and sophisticated methods and you cannot even estimate how much wealth they have accumulated. At times, one feels as if india is going the Nigerian way. The politicians of West Bengal are the sole exception to this rule but they have perpetuated the poverty in the State from one generation to the next because of their very poor governance.

The game of the political class is to entrench itself in power by hook or by crook, play in power and pelf and rule the states/ country by "Divide and Befool" policy. The status of Indian governance should be judged by at least three parameters and not by GDP growth alone. The three parameters are - Human Development Index (India occupies 134th place in the International table), ease of doing business in India (134th place) and extent of poverty. The latest household survey released by Government of India on 03/07/ 2015 presents a very grim picture of rural poverty where monthly income of 135 million households is less than Rs.5000.

The social fabric too has been destroyed by the capricious and usurptive political class. The sinister reservation policy has made each community the enemy of the other. Jats want reservation because Ahirs have been given this benefit. Mr. Ram Kumar Saini (BJP MP from Kurukshetra) started instigating and congregating other communities to ostracize the Jats. He brazenly spews the communal venom and no body from BJP High Command stopped him from doing so. The system of recruitment has already enslaved the people. Even the recruitment for the post of Beldar is decided by the CM office. The constituency size of an MP in England is the same as that of an MLA in India. But the MP has more business to recommend any person for any appointment in an institution or the Government. The recent cancellation of fair recruitment of 7000 constables in Haryana is borne out of such narrow considerations. The list of people to be recruited is finalized by the CM office and the recruiting authority simply puts its seal on the list. This vitiated process has been going on for a long time. As a result, the wards for the applicants approach the local MLAs of the ruling party with folded hands to seek favor. Persons having allegiance with ruling party or money bags only get the jobs during the five year term. Recently two powerful ministers in Haryana were able to provide compensation for damaged wheat crop at the rate of Rs 12000 per acre to every farmer in their constituencies. Patwaris became very rich in the process.

A recent test of school teachers in Punjab showed that they were more illiterate than the students. Same is the situation in other states as well Government schools in various states have become a flop show. The parents are compelled to send their children to private schools who charge very heavy fees. The situation in government hospitals is no better. The

common refrain in the villages is ," Please save us from the loot of private schools and private doctors." The quality of education in most private Engineering and Medical colleges is woefully poor. These institutions are now deemed only as degree providers. The common man cannot fight injustice because the fees charged by advocates is exorbitantly high. There are many advocates in the Supreme Court who charge Rs 5 lakh to 15 lakh per hearing and they never give fee receipts to the client. Obviously their income tax returns are false. The superior judiciary appoints judges mostly from this category. Many people in electronic media too have rag to riches stories. Radia tapes could have exposed them fully. The law and order situation in northern India (except H.P.) is bewildering looking at the daily cases of murders, rapes and kidnapping. FCI never bothers for the colossal loss of stocked wheat (in the open) during rains. Nor does it tell how the stocked wheat is being utilized during the year.

Now the Indian political system has almost become a cesspool and one does not see any chance of its revival. The democratic system has been greatly corroded and we see political demagoguery and crony capitalism all round. The think tank of each political party remains busy in devising and designing stratagems against their opponents. Remember how Mamta Banerjee expelled Tatas from Singoor and how three ministers of UPA Govt. went to the airport to receive Baba Ram Dev and how shabbily he was treated two days after Consequently Indian politician is now euphemistically called as "pollutician" So the time has come when a group of enlightened citizens should come forward and start an Arab Spring or a JP like movement earnestly to educate the people about their continuing exploitation by the political class (Later on , JP movement became infamous because J.P. withdrew himself from the scene after the formation of Janta Party Govt. in 1977). The sole motive of this movement should be to make people aware that they are the masters and legislators are their servants, the policy of "Divide and Befool" will not work and people cannot be taken for a ride any more. The people's movement should be strong enough to make the political class behave and make the ruling government implement the N-point national program of economic development. In other words, the movement should usher the nation in a new era when political masters will be greatly afraid of the public opinion.

The theorists of democracy say that people get the kind of government they deserve. There is lot of merit in this statement. But the predicament of Indian voters is that they have to choose their representatives from the existing discredited lot. It is now agreed that we cannot replace the existing system of democratic governance. But we can definitely purge or strengthen it by bringing in it an adequate dose of morality, ethics, transparency and accountability in the system as it happens in western democracies. This will be possible only if people are able to realize their strength and responsibility as electors and defeat the political class in its own nefarious game being played presently. People should also decide to elect candidates purely on the basis of merit and not swayed by caste and communal considerations. Therefore, the job will be half done, if people finally realize their strength, start wielding power as electros and compel the government of the day to deliver. This will be possible if the movement does not align itself with any political party and follow the straight middle path.

Is it not a strange phenomenon that we are permissively allowing a class of people to rule us forever whom we hate and detest so much? Are we now in a trance? The fact of the matter is that the politicians of today are behaving like princes of the past because there is no public pressure on them to mend their ways. Time has come when we have to ask the political class why it has failed to make India as strong as China or European countries economically by now. Is it not some kind of a consipiracy against the people and the nation? The political class should be made to answer this question and realize that it is collectively and solely responsible for keeping the country in the present state of affairs even 68 years after the Independence.

The defeat of a ruling political party at the subsequent general elections is no punishment for its misdeeds and misgovernance. The history of Indian democracy shows that political parties regrow quickly even after shattering defeat at the polls. This is because the next ruling party forgets all poll promises immediately and starts enjoying power like its predecessor. People are now compelled to reminisce the days of earlier ruling party whom they had defeated so convincingly at the polls. That is why; Congress Party has risen from its grave because of the continuous mis-steps of NDA government. Now the question is how long this cycle of parasitic exploitation will go on? Time has come when every voter of the country has to ask this question to himself.

[NOTE: - Those who agree with my views may kindly respond at my e mail address i.e r.niwas_malik@yahoo.co.in]

हमें जिन पर गर्व है

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के आजीवन सदस्य श्री राजपाल बांकुरा के सुपुत्र जितेश बांकुरा ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली द्वारा आयोजित 12वीं कक्षा की परीक्षा 2015 अमारवती विद्यालय अमरावती एन्कलेव पंचकूला से 84.4 प्रतिशत अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण की।

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के समस्त सदस्यगण श्री जितेश बांकुरा की इस शानदार सफलता पर हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

Uncompromising Nationalist Sir Chhotu Ram

Er. Suresh Kumar Malik

Sir Chhotu Ram's ideal of nationalism could not be compromised in any situation and at any cost. The British Govt. offered to Chhotu Ram chairmanship of the Tribunal constituted to review the Lahore Conspiracy Case in which the three freedom fighters - Bhagat Singh, Sukhdev and Rajguru - were named as main accused. Chhotu Ram's nationalist impulse reacted sharply. The charges against the conspirators, he said, were serious enough, but they acted for sheer love for their country. Their acts, however, condemnable, were committed under the highest patriotic impulse. Hence, he could not agree to their being tried as criminals. What Chhotu Ram said about the three revolutionaries stunned the British bureaucrats. Only a nationalist of the highest order could make, such a statement. Nothing could possibly deflect him from his ideals of nationalism as a political ideology and humanism as his personal prized possession. Both nationalism and secularism filled his head and heart to the brim. This sometimes brought him to cross swords with the communal elements.

As a special `Guest of Honour' at function organized by students on Nov. 4, 1940 at Lahore, Chhotu Ram spoke out rightly, "I am a nationalist to the core. Out of selfishness, some organisations have tried to paint me as a communalist of the worst type, but I wish to tell that the cloak of communalism does not suit me at all. If Mahatma Gandhi does not become a communalist by having complete faith in Maulana Azad and Pt. Jawahar Lal Nehru, he can remain a nationalist by joining hands with Mr. Asif Ali why cannot I remain a nationalist by joining hands with Sir Sikandar Hyat Khan for the good of the people of the Punjab?

Much of Chhotu Ram's precious time was spent in such unnatural situations. But he was well aware of the far reaching implications thereof. He would certainly have been relevant in the present atmosphere as well when the ideal of nationalism is gradually straying in oblivion, under the ever increasing influence of evils like casteism, religious fundamentalism and political obscurantism.

The greatest Haryanavi and a visionary of the 20th century Sir Chhotu Ram was the only leader in India who could properly size up Jinnah and other communal leaders for the sake of oneness of the mother land.

He became an apostle of Hindu, Muslim and Sikh unity, a great nationalist and patriot of his time. He has left behind him a rich legacy of both thoughts and deeds. It is in this legacy that his spirit abides for ever.

Jat Raja laid Foundation of Laxmi Narain Temple, Delhi

Er. Suresh Kumar Malik

Among the three worship places constructed before independence at Reading Road, Della, Laxmi Narain Temple is the most famous place. It is also known as Birla Mandir. This was built by Seth Jugal, Kishore Birla.

The foundation of Laxmi Narain Temple was laid by Jat king of Dholpur Maharaja Udai Bhan Singh Rana on Sunday, Amavasya of Chaitrm month the 26th March, 1933.

Biral's Advisor Pt. Madan Mohan Malviya had put up conditions that the foundation of Laxmi Narain Temple should be laid by a King/Maharaja in whose pedigree "no one ever drank, no girl was married to Mohammedans, and no gamble was played." From among the Raja Maharajas in India, all these conditions were fulfilled by Raja Udai Bhan Singh of Dholpur. Hence, it was by his pious hands that the foundation stone of the temple was laid. A few people out of those gathered there on this auspicious occasion are still alive and they tell about the whole proceedings. A notice board at the temple informs about this fact. It took six years to build the grand temple which was inaugurated by Mohan Das Karmchand Gandhi on 18th March, 1939.

बुढ़ापे को सुखी कैसे बनावें?

Hkjpun tSu] ckMesj

इन्सानों के साथ संसार के सभी जीवों में बचपन, जवानी, प्रौढ़ता एवं बुढ़ापा आना प्रकृति का नियम और ईश्वर द्वारा रचित रचना है। इसे कभी भी नकारा नहीं जा सकता। इन्सान का बुढ़ापे को सुखी कैसे बनायें? इस पर चर्चा करें तो बचपन हंसी खुशी, मौज मस्ती की बिना जिम्मेदारी की जिंदगी है। जवानी संसार के भोग भोगने की मस्ती भरी जिन्दगी के साथ परिश्रम कर धन वैभव अर्जित करने का अवसर होता है। प्रौढ़–अवस्था अपनों को सहारा देकर जीने का आदर्श मार्ग बताता होता है वहां बुढ़ापा दूसरों के सहारे जीने की मजबूरी होती है। वैसे भी बुढ़ापे को दुःखों का दरिया माना गया है। इस अवस्था में शरीर के कई अंग सक्रियता खो बैठते हैं जिसके कारण विभिन्न प्रकार की बिमारियां घर कर जाती है। बुढ़ापे में कार्य करने की क्षमता के अभाव में घनोपार्जन नहीं होने से परिजन भी कनी काटने लगते है। बुढ़ापे में स्वभाव में तीखापन, चिड़चिड़ापन, रूखापन आने से घर परिवार के लोग भी तिरस्कार की दृष्टि से, हीनभावना से देखते है। यदि बुढ़ापे में धन का अभाव है, तो दूसरों के आगे हाथ पसारने की मजबूरी होने लगती है। इतना ही नहीं यदि बुढ़ापे में पत्नी की मृत्यु हो जाती है तब नारकीय जीवन जीना पड़ता है।

व्यक्ति अपने पुत्रों की सुख सुविधा के लिये अपने पेट पर पट्टी बांध कर अर्थात स्वयं के जीवन को मौज मस्ती से पृथक रख कर बड़े परिश्रम के साथ धन अर्जित करने में लगा रहता है। वह अपने बच्चों के लिए शिक्षा, चिकित्सा, के लिये साधन जुटाने, भविष्य में अपने बच्चों के आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़े इस के लिये कड़ी से कड़ी मेहनत के साथ अपने कर्म बंधन के साथ अर्थात अनेक कठिनाई से धन अर्जित करता रहता है। जैसे ही इनके बच्चे जवानी में अर्थापार्जन के योग्य बन कर शादी करते है कि इनका मोह अपने बूढ़े मां बाप से धीरे–धीरे छिटकने लगता है। ये अपने वृद्ध मां बाप से पृथक रहकर स्वतंत्र जीवन जीने की फिराक में रहते है। इस कारण भी वृद्ध मां बाप के सामने जीवन जीने की कई कठिनाईयां मुंह बाये खड़ी हो जाती है। वृद्धों का अकेलापन इन्हें काटने को दौड़ता है। क्योंकि पुत्रों की जुदाई से ये पौत्र प्रेम से भी वंछित रहते हैं।

बुढ़ापे के कारण जीर्णशीण शरीर भी परिश्रम करने में बाधक बन जाता है। आंखों की रोशनी मंद होने लगती है। मुंह से बराबर आवाज भी नहीं निकल पाती है। शरीर के अंग शीथल बन जाने से पांव लंगड़ाते है, हाथों में कम्कंपी शुरू हो जाती है। शरीर का प्रत्येक अंग कई प्रकार की बिमारियों से ग्रस्त हो जाता है। ऐसे बुढ़ापे की शीर्ण स्थिति में हाथ से रोटी पकाना तो दूर हाथ से रोटी खाने की मजबूरी हो जाती है। खटिया पर पड़े कहराते अपने पुत्रों के लिए जीवन को संजोय सुखभरे स्वप्न को याद कर तड़फ उठता है और बूढ़ी आंखों के कारण पुत्रों द्वारा अलग करने से होने लगता है। यदि पुत्रों एवं पुत्र वधुओं के साथ बुढ़ापा व्यतीत करना पड़ता है तो दो जून की रोटी की मजबूरी इनके सामने मुंह बाये खड़ी हो जाती है। एक गिलास पानी के लिये प्यासे रहना पड़ता है। देखभाल के स्थान पर तिरस्कार झेलना पड़ता है। औलाद की गाली गलोच इनके सम्मान में बाधक बन जाती है। इतना ही नहीं इनके द्वारा अर्जित धन को बच्चे अपनी सुख गृहस्थी बनाने में बेधड़क होकर खर्च करते है यदि बूढ़े मां बाप ने इसके लिये आना कानी की जुगात की तो आत्महत्या अथवा अनहोनी करने पर उतारू हो जाते है ऐसी स्थिति में लाचार वृद्ध मां बाप अपनी लोक लज्जा को संसार से छिपाने के लिये जहर का घुट पीकर बच्चों के हितार्थ अपना सब कुछ न्यौछावर कर देते है और खुद हाथ मलते उनके आश्रित बन कर हाथ पसारने की नारकीय जिन्दगी जीने को मजबूर हो जाते है।

संसार के इस माया जाल में वे ही वृद्ध माता–पिता स्वर्ग का सुख भोगते है जिनकी औलाद अपने वृद्ध माता पिता की जिन्दगी भर सेवा करते है। इनकी हर आज्ञा का पालन करते है। इनके बताये मार्ग पर चलकर आज्ञाकारी होने का आभास करवाते है। यह इनका सौभाग्य ही है। परन्तु आजकल ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है। फिर भी वृद्ध माता–पिता को अपने जीवन सुखमय, शान्तिपूर्ण जीना है तो स्वयं को अर्थ से समृद्धशाली होना होगा। यदि पास में पैसा नहीं होगा तो बुढ़ापा नरक को आंमत्रित ही करेगा। जो कुछ है उसे बच्चो के भविष्य के मोह में उन पर खर्च करने से जरा बचना चाहिये। वैसे भी पैसों के लिए बच्चों के आगे जीवन के अतिंम पड़ाव तक हाथ पसारने की मजबूरी नहीं आये ऐसा जुगाड़ बिठाना चाहिये।

वृद्धावस्था में सबसे बड़ा सुख उसे अपनी पत्नी से मिलता है जो कि बुढ़ापे के सुख–दुख, अभाव, अभियोग, बिमारी सिमारी, रोटी पानी के लिए सहारा बनती है। इसके उपरान्त भी स्वयं को अपने दैनिक जीवन को ऐसा ढालना चाहिये कि उनका वृद्ध जीवन सुख की पगडंडियों पर आसानी से दौड़ता रहें। इसके लिये अपना जीवन सादगी, सौहार्द, सहनशील, स्नेहभरा ह्रदय की विशालता, साहस, स्पष्टवादिता के साथ जीने का प्रयास करना चाहिये। यदि इन गुणों को आपने बुढ़ापे का सहारा बना लिया है तो स्वर्ग आपके चरणों में होगा। बुढ़ापे में चरखा–फरखा खाने के स्थान पर हल्का–फुल्का खानपान का सेवन करना बुढ़ापे को कईं बिमारियों से बचा सकेगा। वहां परिवार परिजनों के साथ मैत्री भाव रखने के लिये उन पर अपनी जिद्द से बचना होगा। अपनी पसन्द उन पर नहीं थोपनी होगी। अपनी रूचियों को पूर्ण करने पर जोर जबरदस्ती का दबाव उन पर नहीं डाले। पुरानी रूढ़ियों कुरीतियों को करने के लिये उन्हें मजबूर नहीं करें। उनकी स्वतंत्रता में नौक–झौंक की टीका टिप्पणी से बचें, उनकी भावी योजना में सकारात्मक सहयोग देने की भूमिका निभावे। बच्चों बहुओं पर अपार स्नेह की गंगा उडेल दे। बस फिर देखिये आपका बुढ़ापा स्वर्ग का सुख भोगने में कदापि पीछे नहीं रहेगा अन्यथा आपकी जिद्द चिड़चिड़ापन, रूखापन, झिड़कियों तीखारपन आपको नारकिय जीवन जीने को मजबूर करेगा।

पारिवारिक जीवन में आपकी वृद्धावस्था आपको आपकी आदतों से स्वर्ग नरक का सुख भोगने को माध्यम बनेगा वहां बुढ़ापे में खानपान पर अंकुश रखें। नियमित व्यायाम में योगासन ध्यान के साथ प्रभुभक्ति में तल्लीन रहें। यही आपके बुढ़ापे का सहारा होगा। यदि अपने बुढ़ापे में ईश्वर की भक्ति नहीं की तो दुखों का दरिया आपके जीवन में दुःखों, अवहेलना, तिरस्कार के आगे जीवन भर रोते–रोते अपने वृद्ध जीवन को नरक में घोल दोगे। यदि परिवार की जगह वृद्धावस्था में ईश्वर के आगे भक्ति स्वरूप में रोते है तो आपको स्वर्ग की सीढ़ियां चढ़ने में ईश्वर का सहारा स्वतः ही मिल जायेगा और आप अपने बुढ़ापे को सुखी बना सकेगें।

1857-The Battle of Haryana

Film Proposal By: Amaresh Misra, the renowned historian and filmmaker

- -

Col M.S. Dahiya

Cause of revolt in Haryana:

Haryana in 1857 was a peasant country. The British administration placed high taxes on Jats, Ahirs and Gujars, known to be industrious peasants, of Karnal and Rohtak. Business men from the towns had come into the villages; they bought land and levied forced labor on Dalit castes. The Jamuna canal opened by the British wreaked havoc in Haryana-it destroyed the soil and converted the soil into swamp and reh, because of which a large number of Haryana peasants faced spleen enlargement and infertility. In various famines, that accompanied British rule; the Business men hoarded grains and Haryana peasants were impoverished. Some of them had to sell their homes, sons and daughters for survival. The British had built a myth that their rule was helping the Jats. But the Jat-Muslim alliance was old and the Mughal house was looked upon with reverence.

In the more arid areas of Sirsa and Hissar, the Rangars and Gujars had enjoyed grazing rights under Mughals. The British looked upon each piece of land as taxable and began depriving the Rangars and the Gujars of their livelihood.

The Haryana 1857 uprising was a revolutionary affair. It was a pure peasant movement meant to establish the rule of the Panchayat, a nationalist, peasant democracy. In 1857 the Haryana peasant showed his force and how he can capture and retain power.

Haryana was close to Delhi and had a strategic importance. Along with the Jat-Gujar-Muslim belts of West Uttar Pradesh, it was meant to form a liberated zone around Delhi.

Revolutionary Role played by Jats:

The Dahiyas, Hudas, Latmar, Ahlawat and Jaglan Jats of Sampla, Rohtak, Naultha, Karnal and Sonepat played a major role in battling the British in 1857. These forces joined hands with Mandhar Rajputs of Nardak in a large anti-British alliance. This alliance included the Surot Jats; they formed a second front with Pathans of Seoli and the Chirklot Pal of Firozpur Meos.

The sacrifice and valour of Hudas and Dahiyas has not even been recorded in Indian history. Loach, the British officer in west and central Haryana, who fled from Rohtak to Gohana and then came back only to be expelled again, wrote in his memoirs (available in the London based library of the School of Oriental and Asian Studies): "Rohtak Jas were the most fearsome. They would not rest during the day and attack at night. On 24th May 1857, at the time of the Rohtak uprising, I could see how Jats belonging to the Ahlawat, Surot, Latmar, Jaglan, Huda and Dahiya clans would fire their one round musket and then disappear. We thought that they had fled. But they used to collect at another place and attack us in ambush style. Their courage and valour was exemplary. I never could imagine that peasants who were till the other day good only in tilling land, were such great fighters as well".

In Rohtak Jat soldiers killed all British officers and soldiers. The Katcheri was burned and all records destroyed. The business men who oppressed the Jat peasants with British help were also targeted. Tehsils Mandauthee, Madeena, Mahim and Sampla were rendered free from British rule.

On 30th May, 1857 a second strong British force. proceeded from Ambala to Rohtak. Jat revolutionaries led the command in Rohtak. Jat led Indian forces defeated them in the guerilla warfare in the battle of Saamree. The defeated British force reached Sampla on 10th June. The British Deputy Commissioner went blind in agony; Rohtak Jats again attacked and defeated the rest of the British forces.

Seeing their inability to capture Rohtak, the British gave the area to Swaroop Singh of Jind, But the fighting went on till December and Swaroop Singh was unable to do anything.

Hodson in Rohtak:

16th August 1857 saw the third battle of Rohtak. This time Hodson, a feared English officer, attacked Jat settlements in Rohtak. The Jats waited for Hodson and his substantial force. Then they attacked him on the open ground. Taken aback by the ferocity of Jat fighters, Hodson ordered a general retreat.

Role played by Jats at other places in Haryana:

Rampura, Rewari, Farukhnagar, Jhajjar, Bahadurgarh, Narnaul, Shyamdi (Saamdi), Rohtak, Thanesar, Karnal Panipat, Paee, Kaithal, Sirsa, Hansi, Nangli, Jamalpur, Hissar, and Sonepat were other as in which Jats of Haryana which fought for years from 1857-59.

Along the GT Road, Jats and other revolutionaries tried cutting off British supplies. Jat Udmiram of Livaaspur (tehsil Sonepat) collected a band of brave men armed only with traditional weapons like tulwars and Bhalas, and harassed British forces along the length and breadth of GT Road.

Jats of Murthal village too played a similar role.

Role played by Muslims and Gujars:

Meanwhile the Haryana Light Infantry and 14th Irregular cavalry revolted in Sirsa, Hissar and Hansi. The Bhatti Nawab of Rania assumed leadership. He was helped by Jats, Rangers and Pachadas, the Muslim Rajput tribes and Gujjars who revolted-en masse. Muhammad Azim, a Mughal Prince went to Delhi and returned with a large force which defeated the British in Hansi and Hissar.

After Hudas and Dahiyas, Ahirs and Meos also played a historic role in Mahendragarh district, specially in the Rewari. Palwal. Nuh, Firozpur and Sohna areas. When the British; came to recover Mahendragarh, Meos with stood them in fierce encounter. Brigadier Showers' column was engaged for weeks in pacification work. Some fifty villages were burnt in reprisals, the 'Mewatti movement' running through Alwar and part of Bharatpur state in Rajasthan.

Kurukshetra Brahmins took the lead in their area. Jats and Dalits burned down the government buildings in Thanesar. Muslims of Asandh besieged Panipat for days. People of Kharkhauda went to Delhi to join Bahadar Shah Zafar and Nahar Singh.

Nawab Mohammad Ali of Farukhnagar, Nawab Bahadur Jung of Bahadurgarh and Nawab Abdurrahman of Jhajjar played a prominent part in leading Indian revolutionaries.

In fact, under Jat leadership, communal harmony and Hindu-Muslim unity was excellent. British officers have written that "Haryana displayed no element of sectarian strife"

Role of Raja Nahar Singh in the battle of Delhi:

Jats of Haryana have an ancient, proud history-they were in the forefront of struggles to liberate India from foreign yoke. They were also torch bearers of national integration and Hindu-Muslim unity.

It is therefore not surprising that when Indians decided to throw off the British yoke, Jats came forward to fight and the anti-British war. No one knows that on 26th July 1857 Bahadur Shah Zafar, the revolutionary ruler of India and Delhi delivered a speech before 1,000 Panchas of Haryana Sarv Khap Panchayat. Zafar said: "Leaders of Sarvkhap panchayat! Take your Pehelwaans and chase the phirangees away. You have the power and the people are with you. You have brave and capable leaders. Your soldiers have fought many battles. I do not believe in the concept that only Kings and Nawabs can be leaders. By surrendering before the British Kings and Nawabs have fallen in the eyes of the people, they have failed their country. The country, is proud of you and your peasant fighters; the country also trusts you. After the British are chased away we will call a durbar and the Panchayat will play a major part in the running of state affairs".

Bahadur Shah Zafar's letter to Haryana Sarva Khap:

Bahadur Shah Zafar also wrote a letter to Haryana Sarv Khap's Pradhan: "Sarvkhap Panchayat ke Pradhan mulk Hind men rehne vale har kaum our mazhab se meri iltaja hai ki is namurad firnagee kaum se mulk ki hukumat ko cheenkarmulk ke kaabil our samajhdaar va khudaparast logon ki ek panchayat ekattha karo. Aur unke haath men mulk saunp do ya haryana sarvkhap panchayat ki tarah saare mulk men ek panchayat banao our pancho men se ek judge panchayati tareeke se mulk ka aaena (vidhan) banakar hukumat ko chalae. Main apne saare akhtiyaar us panchayat ko badee khushee ke saath deta hoon".

These sayings prove Haryana's determining in the freedom struggle. It also shows that the model of Jat Sarva Khap Panchayat was invoked by India's last Emperor as a national model. The country indeed owes a great debt to the Jats of Haryana.

Along with Bakht Khan, Nahar Singh, the Jat ruler of Ballabearh played a major part in the crucial battle of the Delhi. Nahar Singh was Bahadur Shah Zafar's right hand-he led the 5,000 strong force-which included Jats, Meos, Gujars, Ahirs, Rajputs, Rangars and Muslims—sent by Haryana Sarv Khap Panchayat to defend Delhi against the British.

Nahar Singh was given the command to defend East Delhi. On 9th July the British tried attacking Delhi from the East. Haryana force led by Nahar Singh routed the 2,500 strong British force.

Haryana forces were used also to defend'south and west Delhi. Under Jat leadership, Meos, Gujars and Jats foiled several British attempts to enter Delhi and went on the offensive attacking British camps taking two in one night.

Nahar Singh deputed military outposts and spy cells from Delhi to Ballabgarh. Seeing his strategies, John Lawrence the British officer suspended the idea to attack Delhi from the east.

The British entered Delhi on 14th September through Kashmiri Gate. In one of the bloodiest conflicts seen ever in human history more than 5,000 Indian and British soldiers lost their lives in a single day. By 20th September Delhi was in British hands though Indians had halted their advance. The Indian forces however had disintegrated in confusion. The British won by default. On 24th September Hodson shot Mirza Mughal, Mirza Khizr and Mirza Jawan Bhakt, the sons and grandson of Bahadur Shah Zafar in cold blood. Their heads were presented before the Delhi Emperor.

Hodson orders to hang Nahar Singh:

Retreating to Ballabgarh fort, just 20 miles from Delhi, Nahar Singh kept attacking the British force trying to storm" Delhi from Agra road. He vowed to avenge the death of Delhi Shahzadas. The British were helpless before the iron gates of Ballabgarh fort. So they planned deceit. Waving white flags five British officers went to the fort and urged Nahar Singh at peace moves are afoot with Bahadur Shah Zafar.

Nahar Singh went to Delhi with an escort was captured by duplicity. Next day the British stormed Ballabgarh fort.

Nahar refused to become a British stooge. Hodson respected Nahar Singh's bravery. He asked him to bow down before the British so that his life can be spared. "I have not learned to bow before enemies," he replied with defiance. Hodson asked him to reconsider. "I have said, now you again listen. The British are my enemies. I cannot ask for a pardon-if I die thousands of Nahar Singh will be born tomorrow". Hodson was furious-he gave orders to hang Nahar Singh and his accomplices near the modern fountain of Chandni Chowk in full public presence. 21st April, 1858 was his 35th birthday. He was hanged on that day itself along with Khushal Singh, Bhura Singh and Gulab Singh.

Thus led by Jats, Harvana played an exceptionally revolutionary role in India's Freedom Struggle. A film which highlights these factors and achievements will showcase Haryana's revolutionary and the role played by Jats and other communities in nation building.

सूचना

जाट सभा पिंजौर 09.08.2015 को रतपुर कालोनी में सुबह 9 बजे से डॉ. अमीत गुप्ता, डी.एम. कारडोलॉजी की देखरेख में हृदय रोग चैकपकैम्प लगाया जा रहा है। आप सभी से अनुरोध है कि ज्यादा से ज्यादा इस कैम्प में भाग लेकर इसका लाभ उठायें।

प्रधान
धर्मबीर सिंह दहियां
जाट सभा, पिंजौर

धैर्य

ujsUnz vkgtk ^foosd*

धैर्य धर्म का लक्षण और मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक गुण है जिसके बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। धैर्य सबसे बड़ी प्रार्थना है जिसके द्वारा जीवन के लक्ष्य का द्वार खुल जाता है। धैर्य ही लक्ष्य के द्वार की चाबी है। वेद भगवान ने भी अधीरता और क्रोध को त्याग कर धैर्यवान सहनशील बनने का आदेश देते हुए कहा ''अहमस्मि महमानः।'' अथर्व 12/!/54 अरे मैं तो अत्यंत धैर्यवान सहनशील हूं। अत्यंत विपरीत या विषम परिस्थिति में भी सामंजस्य बैठाकर समभाव बनाकर मुस्कराते रहना ही धैर्यवान होना कहलाता है।

योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन को गीता का ज्ञान देते समय भी योगियों के लिए स्थितप्रज्ञ होकर धैर्यवान होना एक आवश्यक लक्षण बताया है। जो सुख में इतराय नहीं विपत्ति में घबराए नहीं और प्रत्येक अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति में समभाव बना रह कर उस स्थिति का सामना करे वही धैर्यवान जीवन में सफलता पा सकता है। जो व्यक्ति सुख के समय उसके अभिमान में इतरा गया उसका सुख क्षणिक होता है और यदि विपत्ति के समय घबरा गया तो वह मुसीबत पहाड़ बन जाती है और व्यक्ति उस कष्ट में टूट जाता है। इसीलिए महाराज मनु ने धर्म के लक्षण लिखते समय धैर्य को धर्म का लक्षण बताया और वेद भगवान ने भी धैर्यवान, सहनशील होने का आदेश दिया।

गुरु वशिष्ठ ने धैर्य का सुंदर उदाहरण देते हुए कहा ''राज्याभिषेक के लिए बुलाये गए और वन के लिए विदा किए गए मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के मुख के आकार में कोई अंतर नहीं देखा'' इसे कहते हैं धैर्य। योगेश्वर कृष्ण पर कैसे–कैसे संकट आए कंस के अत्याचार, जरासंध के प्रहार, शिशुपाल के दुर्वचन परंतु वह सच्चे योगी की भांति सदैव शांत भाव से मुस्कराते रहे। आधुनिक काल में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द पर ईंट पत्थर फैंके गए, अनेकों बार विष दिया गया, लांछन लगाए गए परंतु वह सब कुछ सहते हुए अत्यंत धैर्य के साथ मानव मात्र के कल्याण में लगे रहे। शायद यही धैर्य ही इन सभी में वह समान गुण था जिसके कारण वह अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पाने में सफल रहे और अपने कार्यो विचारों से अमर होकर हम सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श स्थापित कर गए।

धैर्यवान सहनशील व्यक्ति के लिए जीवन में कुछ भी असंभव नहीं ऐसा कहते हुए नीति शास्त्र में सुंदर वर्णन किया है ''जिसके हृदय में जल के समान शीतल समुद्र छोटी सी नदी सा, मेरू पर्वत पत्थर के खंड समान, सिंह हिरण के समान, सर्प पुष्पों का हार और विष अमृत के समान हो जाता है। शांत रहने और धैर्य रखने से व्यक्ति हर कठिनाई पर विजय पा सकता है इसीलिए कहा गया अच्छे श्रोता बनो धैर्य से सुनो लेकिन करो वही जो तुम्हारा विवेक कहता है। धैर्य सब प्रसन्नताओं व शक्तियों का मूल तत्व है जिसके पास धैर्य संयम सहनशीलता है वह जो इच्छा करे प्राप्त कर सकता है। धैर्य को कमजोरी या मजबूरी समझने वाले मूर्ख होते हैं सहनशीलता तो वीरता का गुण है। अधीर जल्दबाज मनुष्य मुंह के बल गिर पड़ते हैं जबकि धैर्यवान सदा लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त करते हैं। धैर्य संयम का रास्ता दर्द से भरा होता है परंतु उसकी मंजिल सदैव सुखदायी होती है। धैर्य और संतुष्टि जीवन नौका की वह पतवारें हैं जो उसे भव सागर के हर भंवर से निकाल कर मंजिल तक ले जाती हैं। विचारों के कारण उपस्थित होने पर भी जिसके मन में विकार उत्पन्न नहीं होते वह धैर्यवान है। धैर्य और मेहनत से वह कुछ पाया जा सकता है जो शक्ति और शीघ्रता से नहीं मिल सकता। इसीलिए हम मनुष्यों को धर्म के लक्षण, वेद के आदेश और मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम, योगेश्वर कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर धैर्य संयम सहनशीलता को अपने जीवन में धारण करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए।

लघु कथा

परिवार का प्रेम सर्वोत्तम

एक नगर सेठ को एक रात स्वप्न में देवी लक्ष्मी ने दर्शन दिए और कहा, 'सेठ, तुम्हारा पुण्य शीघ्र समाप्त होने वाला है। उसके बाद मैं यहां से चली जाऊंगी। इसलिए यदि तुम्हें कुछ मांगना हो तो अभी मझसे मांग लो।' सेठ ने लक्ष्मी जी से हाथ जोड़कर कहा कि वह अपने परिवार के सदस्यों से सलाह करके जो मांगना होगा अगली रात मांग लेगा। अगले दिन सेठ ने अपने परिवार के सभी सदस्यों को एकत्र किया और उनसे स्वप्न के बारे में चर्चा की। बड़े पुत्र ने हीरे–मोती और महल आदि मांगने को कहा। बीच वाले पुत्र ने स्वर्ण मुद्राएं और अपार राशि मांग लेने को कहा। छोटे पुत्र ने सुझाव दिया कि हमें लक्ष्मी जी से अन्न का भंडार मांगना चाहिए। इसी प्रकार बड़ी सेठानी और उसकी पुत्रवधुओं ने भी अपनी–अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ न कुछ अलग ही मांगने को कहा। अंत में सबसे छोटी पुत्रवधु की बारी आई तो उसने आदर पूर्वक अपने ससुर से कहा, 'पिताजी जब लक्ष्मी ही चली जाएंगी तो ये वस्तुएं किस प्रकार हमारे पास रहेंगी? इसलिए यदि आपको मांगना है तो आप यह मांगिए कि हमारे परिवार में सदैव प्रेमभाव बना रहे।' परिवार के सभी सदस्यों को छोटी बहू की यह बात बड़ी अच्छी लगी। जब अगली रात के समय लक्ष्मी ने फिर स्वप्न में दर्शन दिए तो सेठ ने हाथ जोड़कर उनसे कहा 'हे देवी! मुझे केवल एक ही वरदान दीजिए कि हमारे परिवार में सब एक–दूसरे का आदर करें, हममें परस्पर विश्वास बना रहे और हम प्रेम की डोर में बंधे रहें।' लक्ष्मी जी मुस्कराई और बोलीं, 'फिर तो मैं भी यहीं रहूंगी।'

डिफेंस में करियर की अनेक संभावनायें

&vukfedk] n- tkxj.k

डिफेंस में करियर

इंडिया आज अगर अपने अंदरूनी और बाहरी दुश्मनों से लोहा ले पा रहा है, तो इसमें भारतीय डिफेंस सर्विस और इससे जुड़े अफसरों, कर्मचारियों, जवानों की बड़ी भूमिका है। ऐसे में जो नौजवान खुद के अलावा देश के लिए कुछ करना चाहते हैं, उनके लिए डिफेंस सर्विसेज में बेहतरीन अवसर हैं। चैलेंज के साथ–साथ समय पर प्रमोशन मिलता है। ऑफिसर्स को तमाम तरह की सुविधाएं, विदेश में हायर एजुकेशन और ट्रेनिंग के साथ–साथ उनके बच्चों की पढ़ाई–लिखाई का पूरा ध्यान रखा जाता है।

हर विंग में है ऑप्शन

अगर आर्मी में करियर बनाना चाहते हैं, तो 10वीं, 12वीं के बाद नॉन–टेक्निकल और टेक्निकल के साथ–साथ एनडीए, सीडीएस के जरिए एंट्री कर सकते हैं। हालांकि आर्मी में कई ऐसे ऑफबीट फील्ड भी हैं, जहां करियर के बेहतरीन अवसर हैं। यहां कॉम्बैट फ्रंट के अलावा, इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट, लॉ प्रोफेशनल्स के साथ ही सामान्य ग्रेजुएट या पोस्ट ग्रेजुएट जैसे नॉन प्रोफेशनल डिग्रीध ाारियों के लिए भी काफी अवसर उपलब्ध हैं।

एनडीए में प्रवेश

नेशनल डिफेंस एकेडमी से इंडियन आर्मी, एयरफोर्स और नेवी किसी में भी ऑफिसर के रूप में एंट्री की जा सकती है।

एग्जाम ऐंड एलिजिबिलिटी

यूपीएससी द्वारा कंडक्ट किए जाने वाले एनडीए के एग्जाम्स साल में दो बार आयोजित किए जाते हैं। इसमें शामिल होने के लिए आपको पहले अच्छे मॉर्क्स के साथ सीनियर सेकंडरी पास करना होगा। एयरफोर्स और नेवी के लिए फीजिक्स और मैथ्स सब्जेक्ट कम्पल्सरी हैं। सबसे पहले रिटन टेस्ट होता है। इसके बाद सर्विस सलेक्शन बोर्ड इंटरव्यू के अंतर्गत इंटरव्यू लिया जाता है और फिर मेडिकल बोर्ड मेडिकल एग्जाम में कैंडिडेट की फिजिकल फिटनेस को जांचता है। इसके अलावा, कैंडिडेट की पर्सनैलिटी और प्रजेंस ऑफ माइंड को भी परखा जाता है। एनडीए के लिए वही अप्लाई कर सकते हैं, जो अनमैरिड हैं और जिनकी उम्र 16.5 से 19 साल के बीच है। एग्जाम का नोटिफिकेशन यूपीएससी जारी करती है।

ट्रेनिंग के बाद अप्वाइंटमेंट

जिन कैंडिडेट्स को अंतिम रूप से सलेक्ट किया जाता है, उन्हें नेशनल डिफेंस एकेडमी खड़गवासला, पुणे में तीन साल की ट्रेनिंग दी जाती है। इस ट्रेनिंग के दौरान वे अपनी स्ट्रीम के अनुसार ग्रेजुएशन की पढ़ाई भी पूरी करते हैं। एनडीए की तीन साल की ट्रेनिंग के बाद उन्हें उनकी चुनी गई विंग में स्पेशल ट्रेनिंग के लिए भेजा जाता है। इसके तहत आर्मी के लिए चुने गए कैंडिडेट्स को इंडियन मिलिट्री एकेडमी, देहरादून, एयरफोर्स के लिए एयरफोर्स एकेडमी, हाकिमपेट और नेवी के लिए नेवल एकेडमी, लोनावाला भेजा जाता है। जो कैंडिडेट ट्रेनिंग के सभी पाट्र्स को सक्सेसफुल पूरा कर लेते हैं, उन्हें उनकी चुनी गई विंग्स में कमीशंड ऑफिसर के तौर पर अप्वाइंट किया जाता है।

सीडीएस से प्रवेश

ग्रेजुएशन कंप्लीट करने के बाद कम्बाइंड डिफेंस सर्विसेज एग्जामिनेशन के जरिए भी स्टूडेंट्स इंडियन डिफेंस सर्विस से जुड़ सकते हैं। यूपीएससी द्वारा यह एग्जाम भी साल में दो बार लिया जाता है।

एग्जाम ऐंड एलिजिबिलिटी

इस एग्जाम के लिए ग्रेजुएट कैंडिडेट ही अप्लाई कर सकते हैं। नेवल एकेडमी के इंजीनियरिंग में बैचलर डिग्री और एयरफोर्स एकेडमी के लिए ग्रेजुएशन के साथ–साथ सीनियर सेकंडरी में मैथ्स और फिजिक्स सब्जेक्ट होना जरूरी है। कैंडिडेट की आयु इंडियन मिलिट्री एकेडमी के लिए 18 से 23 साल, नेवल एकेडमी के लिए 18 से 21 साल और एयरफोर्स एकेडमी के लिए 18 से 22 साल होनी चाहिए। सीडीएस के एग्जाम में रीजनिंग पॉवर, डिसीजन मेकिंग क्वालिटी, प्रजेंस ऑफ माइंड आदि की जांच की जाती है। बेसिक एग्जामिनेशन क्लियर करने के बाद एसएसबी का इंटरव्यू फेस करना होता है। इंटरव्यू में भी प्रजेंस ऑफ माइंड की ही टेस्टिंग होती है। आगे के कई प्रोसेस के बाद ही कैंडिडेट को डिफेंस सर्विस के लिए सलेक्ट किया जाता है।

इंजीनियरिंग से प्रवेश

अगर आपने इंजीनियरिंग की है, लेकिन देश सेवा का जज्बा रखते हैं, तो टीजीसी, शॉर्ट सर्विस (टेक्निकल) और यूनिवर्सिटी एंट्री स्कीम के जरिए आर्मी ऑफिसर बनने का रास्ता खुल जाता है। इसके बाद आप अपने टेक्निकल नॉलेज का बेहतर प्रदर्शन कर, चैलेंजिंग रोल्स निभा सकते हैं।

टीजीसी इंजीनियर्स

बाई या बीटेक की डिग्री हासिल कर चुके 20 से 27 साल की उम्र के युवा अपनी टेक्निकल स्किल्स के बल पर देश सेवा करने के लिए आर्मी के टेक्निकल ग्रेजुएट कमीशन (टीजीसी) से जुड़ सकते हैं। इसके लिए वर्ष में दो बार अक्टूबर–नवंबर और अप्रैल–मई में नोटिफिकेशन आता है। सलेक्शन के बाद इंडियन मिलिट्री एकेडमी में एक वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता है और फिर आर्मी में स्थायी नियुक्ति मिलती है।

शॉर्ट सर्विस (टेक्निकल)

इंजीनियरिंग की किसी भी ब्रांच में डिग्री हासिल करने वाले युवा शॉर्ट सर्विस (टेक्निकल) के माध्यम से आर्मी से जुड़ सकते हैं। आवेदन प्रक्रिया नवंबर से जनवरी और मई से जुलाई के बीच होती है, सलेक्शन होने के बाद कैंडिडेट्स को ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी (ओटीए) चेन्नई में 49 सप्ताह की ट्रेनिंग दी जाती है।

टीजीसी एजुकेशन (एईसी)

शिक्षा में रूचि रखने वाले युवा आर्मी में टीजीसी एजुकेशन सेक्शन चुन सकते हैं। इसमें एसएसबी के जरिए प्रवेश मिलता है। फर्स्ट या सेकेंड डिवीजन में एमएस या एमएससी कर चुके 23–27 साल की उम्र का कोई भी भारतीय युवा इसमें जा सकता है। इसमें एंट्री के लिए इंडियन आर्मी की तरफ से जून/जुलाई और दिसंबर/जनवरी में आवेदन मांगे जाते हैं।

जाट समाज के गौरव

eu tkV ygj if=dk e^ tkV lekt dk xkjo* dk y[k i<k tkjkds lijkgkuk fy[kk gA blesT;knkrj jk tkvk dk uke gA yfdu dbuke vkj Hkh ftUgu tkV tkfr dk xkjo c<k;k gA blfy;] vki dh tkudkjh gr eidN uke bl i= efy[k jgk g vkj e> vk'kk g fd vki tkuke efy[k jgk gmu egku tkV 0;fDr;k dk uke viuh lpheikfey djxA

lclsigy e ik-'kj flg rFkk vkpk;l Hkxoku no dk uke yuk pkgxkA ik-'kj flg irki flg dk jk dk le; l;Dr itkc dk fMIVh phQ euhLVj FkA ckn e ikQlj 'kj flg u irki flg dk jk dk f[kykQ vyx gfj;k.kk jkT; dh LFkkiuk dh ekx dk ydj yMkb yMh vkj dkxl ikVh dk NkMdj viuh vyx gfj;k.kk ykd lfefr dk uke lsikVh cukbA ftlu itkc lsvyx gfj;k.kk jkT; dh LFkkiuk dk fy;slÄk"kl fd;k vkj blemudk lQyrk Hkh feyh vkj bl l?k"kle lclsT;knk lkFk vkpk;lHkxoku no u fn;kA ik-'kj flg 1977 e turk ikVh dh fVdV ij jkgrd ls,e-ih- cu vkj lclsT;knk erkls thru dk fjdkM cuk;k tk fjdkM mlh iin gMMk u 2009 e ,e-ih- dk puko e rkMkA 1977 dk ckn ik-'kj flg lVy xouleV dk vnj nk ckj fefuLVj vkQ LVV Hkh jgA o iDdj vk;llekth vkj ,d bekunkj Nfo dk 0;fDr FkA ,d le; Fkk tc lclsT;knk 0;fDr lj NkV jke dh jfy;k e tkrs Fk ;k mldk ckn ik-'kj flg dh jfy;ke vkj ik-'kj flg dk ckn pk- noh yky dh jfy;keA

ik-'kj flg jkgrd ftys dk ckxir xko dk jgu oky FkA nlljk uke e vkpk;l Hkxoku no dk yuk pkgxkA vkpk;l Hkxoku no fnYyh e ujsyk xko dk jgu oky FkA o viu ekrk&firk dh bdykrh lrku Fk vkj mUgku viu uke dh 200 ch?kk lkjh tehu nku e nd j ujsyk e x:dy dh LFkkiuk dhA bldk ckn mUgku >Tt j e x:dy dh LFkkiuk dhA vki iDdk vk;llekth Fk vkj mudk vk;llekt dh lok e cgr cMk ;kxnku jgkA bldk lkFk mudk lclscMk ;kxnku ik-'kj flg dk lkFk feydj vyx gfj;k.kk jkT; dh LFkkiuk dk fy;s jgkA bldk lkFk& lkFk mUgku pMhx< dk Hkh gfj;k.kk lsitkc dk nu dk f[kykQ l?k"kl fd;kA

vxyk uke e Mk- Lo:i flg dk yuk pkgxkA Mk- Lo:i flg igys tkV f'k{kk 'kkL=h Fk tk fnYyh fo'ofo|ky; dk okbl pklyj cuA ckn e ok ;ih, llh dk ecj Hkh cu] jkT; lHkk dk ecj cu vkj xtjkr dk xouj Hkh cuA o jkgrd dk lk?kh xko dk jgu oky FkA

vxyk uke e ,d vkj f'k{kd dk yuk pkgxk ftudk uke cyno flg Fkk] ok jkgrd e gek;iij xko dk jgu oky FkA jkgrd e tkV ,tdsku dh lLFkk dh LFkkiuk dh Fkh vkj ok tkV gkbLdy jkgrd dk lLFkki d gMekLVj Fk ¼igy gMekLVj½A

vxyk uke e lkbfVLV Mk- txthr flg dk yuk pkgxkA o jkgrd dk HkkiMkank xko dk jgu oky FkA o vfookfgr FkA o tc vefjdk ls ih,pMh djdk vk;s rk mudk xouleV dky t e yDpjj dh iklV nh xbA blls mudk viuk dfj;j vPNk curk fn[kkb ugh fn;k vkj ok okfil vefjdk py x;A ok ,d LiI lkbfVLV Fk vkj mUgku fjVk;jeV rd vefjdk dk vnj uklk e dke fd;k vkj mudh fxurh uklk e dke djus oky iFke 10 lkbfVLV dk vnj gksrh FkhA o Mk- Lo:i flg dk lgikBh FkA

vxyk uke e ekLVj pnxhjke dk yuk pkgxkA ekLVj pnxhjke Hkkjr dk ,d tkus eku igyoku FkA bldk lkFk o ,f'k;k pfi;u Hkh FkA ekLVj pnxhjke dk fgn dslijh egjmn dk gjkdj fgn dslijh dk f[krkc viu uke fd;k FkkA bruk gh ugh ekLVj pnxhjke jke u egjmn dk yxkrkj rhu ckj gjk;k vkj egjmn dk ckn tc rd ekLVj pnxhjke u dsrh yMh fgn dslijh dk f[krkc ekLVj pnxhjke dk ikl gh jgkA mu ls;g f[krkc dkbugh Nhu ldkA egjmn tl Hkkjh Hkjde igyoku tk ftldk otu 115 fdyk Fkk tcfd ekLVj pnxhjke dk otu 100 fdyk Fkk dk yydkjuk vkj gjkuk dkb vklku dke ugh Fkk tcfd ekLVj pnxhjke u ,d ckj ugh cfYd yxkrkj rhu ckj gjkdj fgn dslijh dk f[krkc viu uke j[kkA yxkrkj rhu ckj gkju dk ckn egjmn u ekLVj pnxhjke lsgkjdj dsrh yMuk gh NkM fn;kA ekLVj pnxhjke fglkj ftys e flls; xko dk jgu oky FkA mudk uke lsvkt fnYyh e ;euk fdukj vkbl,lchVh dk ikl pnxhjke 0;;ke'kkyk gA

vxyk uke e xk;d dykdkj egj flg dk yuk pkgxkA o ifMr y[ehpn dh rjg gh ,d ifl) xk;d Fk tkurk th lHkkvk pnckl dh vktkn fgn Qkt e Fk vkj vktkn fgn Qkt dh rjQ lsyMrs g, 1944 e ns'k dk fy, 'kghn gk x;s FkA ok jkgrd ftys dk cjkuk xko dk ,d xjhc tkV fdlku dk ?kj iink g, FkA

&Mk- vkj-,l- ukny
çkQslj ¼lokfuo`r½

D;k Hkyk fn;k tk,xk vktknh dh igyh yMkbZ 1857 dk\

–सईद नकवी, वरिष्ठ पत्रकार

गत वर्ष 10 मार्च को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने वर्ष 1857 के विप्लव की स्मशति को संजोए रखने के लिए सक्रिय एक नागरिक समूह से वादा किया था कि वे सरकार से इस संबंध में ब्योरे आमंत्रित करेंगे कि आजादी की पहली लड़ाई को कैसे समारोहपूर्वक याद रखा जाए। फिर दो माह बाद ही केंद्र में सरकार बदल गई। इसी के साथ इस दिशा में होने वाली प्रगति भी अवरूद्ध हो गई। बहुत संभव है कि राष्ट्रपति भवन को इस संबंध में सरकार से बात करने का असर ही न मिला हो।

इसी दौरान आजादी की पहली लड़ाई की एक और वर्षगांठ आई और चली गई और किसी का उस पर ध्यान ही नहीं गया।

वह 11 मई 1857 का दिन था, जब ब्रिटिश भारतीय फौज के बागी सैनिक दिल्ली पहुंचे। इससे एक दिन पहले 10 मई को वे मेरठ कंटोनमेंट पर कब्जा कर चुके थे। इस विप्लव को देश के ग्रामीणं–किसानों का भरपूर समर्थन प्राप्त था। आंदोलन में शामिल अनेक सैनिक हिंदू थे, लेकिन उन्होंने दिल्ली पहुंचने पर अंतिम मुगल शासक बहादुरशाह जफर को अपनी लड़ाई के प्रतीक के रूप में चुना था। उन्होंने जफर को हिंदुस्तान का वास्तविक शासक घोषित किया था। यह साझा उम्मीदों और संघर्षों का सेकुलरिज्म था।

बुजुर्ग बादशाह को उनका अनुरोध मानना पड़ा। लेकिन उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध इस लड़ाई की कमान अपने मित्र बल्लभगढ़ के नौजवान राजा नाहर सिंह को सौंपी थी। यहां बता दें कि बात केवल 10 या 11 मई 1857 की ही नहीं है, देश में बगावत की सुगबुगाहट एक लंबे समय से थी। एक मायने में वर्ष 1856 में अवध पर अंग्रेजों के कब्जे और अवध के लोकप्रिय नवाब वाजिद अली शाह की गिरफ्तारी के बाद से ही अवाम में असंतोष की लहर भड़की हुई थी। नवाब को कलकत्ते के समीप स्थित मटिया बुर्ज में निर्वासित किया गया था।

यह सच है कि वर्ष 1757 की प्लासी की लड़ाई में अंग्रेजों द्वारा जीत दर्ज किए जाने तक भारतीय शासकों और नवाबों की ताकत बहुत क्षीण हो चुकी थी। लगभग यही वह समय था, जब अहमदशाह अब्दाली का साया भी दिल्ली पर खतरे की तरह मंडरा रहा था, जिसकी परिणति वर्ष 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई के रूप में हुई।

आश्चर्यजनक ही है कि इन ब्रिटिश और अफगान खतरों के बावजूद तब दिल्ली और लखनऊ में दरबार में कमाल की सांस्कृतिक गतिविधियां हो रही थीं। हाउस ऑफ कॉमन्स के तत्कालीन नेता विपक्ष बेंजामिन डिजराइली ने अचरज जताया था कि इन राजाओं और नवाबों को उनकी प्रजा कितना चाहती थी। उन्हें इस बात की भी चिंता थी कि अंग्रेजों की **'फूट डालो और राज करो'** की नीति विफल होती जा रही थी और 1857 का विप्लव भारतीयों की एकता का सबसे बड़ा सबूत था। नेता विपक्ष के तौर पर तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत की निंदा करते हुए उन्होंने कहा था कि हिंदुओं और मुस्लिमों ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में एक–दूसरे का साथ दिया, इससे बड़ी विफलता ब्रिटिश राज की और क्या हो सकती थी।

हिंदुओं और मुस्लिमों के साथ साझा मकसद से एकजुट होने को तब औपनिवेशिक अधिकारियों ने अपने लिए एक बड़ा खतरा माना था। निश्चित ही, आजादी की वह पहली लड़ाई इस बात की हकदार है कि उसकी याद को संजोकर रखने के समारोहपूर्वक राष्ट्रव्यापी प्रयास किए जाएं। और अगर एक बार 1857 के विप्लव को याद रखने के प्रयास शुरू हो गए तो उससे संबंधित अनेक अन्य यादगारों को संजोने के प्रयासों की भी शुरूआत हो जाएगी।

बहादुरशाह जफर को रंगून में एक जूनियर ब्रिटिश अफसर के गैरेज में कैद करके रखा था। वहीं पर उनकी मौत हुई थी। काफी समय तक यही पता नहीं चल सका था कि जफर की कब्र कहां है। अरसे बाद इसका पता चल सका था।

जैसा कि इतिहास में दर्ज है, अंग्रेज आखिरकार विप्लव को कुचलने में कामयाब रहे थे। विलयम डेलररिम्पल की किताब 'द लास्ट मुगल' में इसका लाजवाब वर्णन किया गया है। मौलाना बकर नामक एक वरिष्ठ कलमनवीस को तब चांदनी चौक के समीप तोप से उड़ा दिया गया था। इन मायनों में वे आजादी की जंग में शहीद होने वाले पहले भारतीय पत्रकार थे। हो सकता है दिल्ली के पत्रकार और संपादकगण इस घटना को याद रखने के कुछ प्रयास करें।

अपने पहले कार्यकाल के दौरान यूपीए सरकार ने वर्ष 2007 में आजादी की पहली लड़ाई की 150वीं वर्षगांठ को समारोहपूर्वक मनाने का मन बनाया था। इसी सिलसिले में वर्ष 2006 के अंत में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अपने घर पर वरिष्ठ राजनेताओं, कलाकारों, समाजसेवियों, पत्रकारों आदि की एक बैठक बुलाई गई थी, ताकि इस महत्वाकांक्षी आयोजन की एक रूपरेखा तैयार की जा सके। उस बैठक में सोनिया गांधी, लालकृष्ण आडवाणी, एबी वर्धन, प्रकाश करात, मुलायम सिंह यादव, लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार, गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता निर्मला देशपांडे, गीतकार जावेद अख्तर सहित कई अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। इन पंक्तियों का लेखक भी उसमें मौजूद था। बैठक में कई विचार प्रस्तुत किए गए, जिनमें से अनेक को स्वीकार भी कर लिया गया था। मसलन यह कि मेरठ से दिल्ली तक के पूरे रास्ते को सजाया जाए और उसमें बीच–बीच में मैमोरियल बने हों। निर्मला देशपांडे के इस सुझाव को बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकार

किया गया था कि बहादुरशाह जफर के अवशेषों को भारत लाया जाए। यह एक अच्छा विचार था, क्योंकि जफर की दिली ख्वाहिश थी कि उन्हें 'क्रू–ए–यार' यानी अपनी मातश्भूमि में ही दफनाया जाए। उन्होंने तो अपनी कब्र के लिए मेहरौली में सूफी संत ख्वाजा बख्तियार काकी के आस्ताने के करीब एक जगह भी पसंद कर रखी थी, तभी शायर–बादशाह ने मायूस होकर लिखा था कि 'है कितना बदनसीब जफर कि दफन के लिए, दो गज जमीन भी न मिली कू–ए–यार में।'

यदि जफर के अवशेषों को भारत ले आया जाता तो यह उस बदनसीब बादशाह के प्रति एक उपयुक्त श्रद्धांजलि होती। म्यांमार की सरकार भी इसमें सहयोग करने के तैयार थी। जब जफर को रंगून में नजरबंद किया गया था, ठीक उसी समय मांडले के शासक को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में कैद कर दिया गया था। तब अखबारों में खबरें आईं थीं कि म्यांमार सरकार जफर के अवशेषों के बदले मांडले के शासक के अवशेषों की अदला–बदली करना चाहती थी। लेकिन इनमें से कुछ भी नहीं हो सका।

1857 में लड़ी आजादी की पहली लड़ाई की यादें हमें आज भी कई तरीकों से प्रेरित कर सकती हैं।

— — — — — — — — — — — — — — — — — —

लघु कथा

नेकी का बदला नेकी

एक लड़का अपनी पढ़ाई का खर्च जुटाने के लिए फेरी लगाकर घरों में जरूरत का सामान बेचता था। एक दिन वह तेज भूख के कारण व्याकुल हो गया और किसी घर से भोजन मांगने जा पहुंचा। दरवाजा एक लड़की ने खोला, लेकिन लड़के ने संकोचवश केवल एक गिलास पानी मांगा। लड़की समझदार थी, वह लड़के को देखकर ही समझ गई कि वह बहुत भूख है। उसने उसे एक गिलास दूध पीने को दे दिया। लड़के ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए दूध पी लिया और पूछा कि उसके बदले उसे कितने पैसे देने होंगे। लड़की ने कहा– कुछ नहीं। यह तो मेरा मानवीय दायित्व है। मां ने कहा है किसी की मदद के बदले पैसा नहीं लेना चाहिए। लड़के ने उससे धन्यवाद कहा और उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि संसार में अभी मानवता बची है। बड़ी होने पर उस लड़की को ऐसी गंभीर बीमारी हो गई जिसका इलाज लोकल अस्पताल में नहीं था। विशेषज्ञ डॉक्टर को बुलाना पड़ा। डॉक्टर को मरीज का विवरण मिला। उसे पढ़कर डॉक्टर को कुछ याद आ गया। वह तुरंत लड़की के इलाज के लिए पहुंच गया। उसने देखा कि सचमुच यह वही लड़की थी जिसने उसे कभी गिलास भर दूध पिलाया था। उसने मन लगाकर लड़की का इलाज शुरू कर दिया। बढ़िया इलाज और देखभाल से वह शीघ्र स्वस्थ हो गई। इलाज का बिल काफी ज्यादा था, लेकिन डॉक्टर ने उसके नीचे कृतज्ञता सहित लिखा– इस बिल का भुगतान काफी पहले एक गिलास दूध से किया जा चुका है। नीचे उसके हस्ताक्षर थे। यह देखकर उसे लड़की के मुंह से निकला– नेकी कभी बेकार नहीं जाती।

'k"k i!t&20 ¼y![ku çfr;ksfxrk½

डबल्यू डी (बी एण्ड आर) हरियाणा द्वारा इस रा%य स्तरीय प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। परीक्षार्थियों को हिंदी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में निबंध लिखने की छूट प्रदान की गई और प्रतियोगिता को ग्रामीण व शहरी दो श्रेणियों में विभाजित किया गया।

इस प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के विशेषज्ञों द्वारा उज़र पुस्तिकाओं की जांच के बाद की जाएगी और परिणाम समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के इलावा प्रतियोगियों को डाक द्वारा भी प्रेषित किया जाएगा। प्रतियोगिता के विजेताओं को 12 फरवरी 2016 को बंसत पंचमी तथा स्वतंत्रता पूर्व के समय के किसान तथा गरीब वर्ग के मसीहा के नाम से प्रसिद्ध नेता दीन बंधू सर छोटु राम की 134वीं जयंती समारोह के अवसर पर जाट भवन चंडीगढ़ में सज़्मानित किया जाएगा। प्रत्येक श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर्ता को 5100 रूपये व स्वर्ण पदक, द्विज़ीय व तृतीय स्थान पाने वालों को क्रमशः 3100 व रजत पदक तथा 2100 रूपये व कांस्य पदक देकर सज़्मानित किया जाएगा। इसके इलावा प्रत्येक श्रेणी में 1500 रूपये, 1000 रूपये 900 रूपये व 600-600 रूपये के 6 सांत्वना पुरूषकार भी प्रदान किए जाएगें।

इस प्रतियोगिता का सारा खर्च 'भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार स्वास्थ्य शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान निडानी' जिला जींद द्वारा वहन किया जाता है। इस मैडीकल विज्ञान एवं शिक्षा संस्थान द्वारा हर वर्ष खेल एवं शिक्षा के साथ-साथ समाज के गरीब वर्ग के लिए निशुल्क स्वास्थ्य शिविर, रक्तदान शिविर जैसे कल्याणकारी कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं और इस संस्थान द्वारा पिछले 26 वर्षो से दो अंतर्राष्ट्रीय ज़्याति प्राप्त शिक्षा संस्थाएं - चौ0 भरत सिंह यादगार स्पोर्टस स्कूल व भाई सुरेंद्र सिंह मलिक यादगार वरिष्ठ कन्या माध्यमिक विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। इन दोनों शिक्षा संस्थानों के छात्रों ने शिक्षा के साथ-साथ खेलों के क्षेत्र में भी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इन स्कूलों के विद्यार्थियों ने कुश्ती, कबडडी, हाकी आदि खेलों में 19 स्वर्ण पदक के इलावा 50 से अधिक पदक जीतकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया है। पिछले दिनों स्कूल के खिलाड़ियों की उपलज़्धियों को देखते हुए केंद्र व रा%य सरकार की खेल पालिसी के अनुसार 4 करोड़ 98 लाख रूपये उत्कृष्ठ खिलाड़ियों को दिए जाएंगे जिनमें से 3 करोड़ रूपये इस स्कूल की अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी सविता सिवाच को दिए जाऐगें और 1 करोड़ 8 लाज़ रूपये अन्य खिलाड़ियों को दिए जायेगें। गत 11 से 14 जून 2015 तक नई दिल्ली में आयोजित हुई सब जुनियर कुश्ती चैंपीयनशिप में इस खेल संस्थान की किरण माथुर ने सिल्वर मैडल व अंजू दुहन ने कांस्य पदक प्राप्त किए हैं और 9 से 12 जुलाई 2015 तक ज़्यांमार देश में आयोजित होने वाली एशियन जुनियर कुश्ती चैंपीयनशिप के लिए भी इस स्कूल की छात्रा सरिता मौर का भारतीय कुश्ती टीम में चयन हुआ है। खेलों के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी इस शिक्षा संस्थान की विशेष उपलज़्धियां रहीं हैं। इस स्कूल की एक छात्रा का कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में ऐशोसिएट प्रोफेसर के पद पर चयन हुआ है व छात्र जय भगवान पुलिस विभाग में उप पुलिस अधीक्षक के पद पर तैनात है तथा एक खिलाड़ी को रेवले में भी नियुक्ति मिली है।

घर हो जाए चकाचक

vkdk{kk ikj dkf'ko

लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स से पढ़ कर आए सम्राट गोयल ने जब अपने घर पर बताया कि वह एक कंपनी खोलना चाहते हैं तो सभी खुश हुए। लेकिन जब उन्होंने कहा कि वह दूसरों के घरों की सफाई का काम करेंगे तो उनकी मां लगभग रुआंसी हो गई और उन्हें बड़ा अजीब लगा कि दूसरों के घर की सफाई करना भला कौन सा काम हुआ। जब सम्राट के दिमाग में घर की सफाई का विचार आया तो उन्हें सबसे पहले अपने बचपन के दोस्त इशान बसाया का ख्याल आया जो पढ़ने में वयस्त थे। लॉ की डिग्री कर रहे ईशान ने सम्राट का विचार समझा और 'ब्रूमबर्ग' की शुरूआत हो गई। यह सन 2013 की विदा का महीना था । लेकिन एक नई शुरूआत जन्म ले रही थी।

आखिर यह ब्रूमबर्ग है क्या बला, यह समझाना तो और भी कठिन था। घर की सफाई तो इतना छोटा सा काम है जो घर पर महरी आसानी से कर देती है तो फिर जनाब आप क्या करेंगे इस सवाल से सम्राट और ईशान का सामना अब आए दिन पड़ने लगा था। ईशान कहते हैं, 'सफाई को लेकर एक और फंडा होता है कि दीपावली पर घर को खूब साफ किया जाता है। कोने–कोने को उजला करना बस उसी वक्त जरूरी है या फिर घर में रंग–रोगन हो रहा हो!' जब इतनी दिक्कतें थीं और पढ़ाई भी इससे अलग की तो फिर घर साफ करने के बारे में ही क्यों सोचा, कुछ और काम भी तो किया जा सकता था। इस सवाल का जवाब सम्राट के पास है। क्योंकि पहले उन्होंने ही सोचा कि ऐसी कंपनी शुरू की जा सकती है। सम्राट को ऐसे 'साफ–साफ' विचार तब आए जब मुम्बई में उनके भाई के घर आग लग गई। पूरे घर में कालिख का साम्राज्य था। घर का बहुत सारा सामान खराब हो गया था और जले सामान के कण घर के कोने–कोने में जम गए थे जिसे साफ करना मुश्किल भरा था। महरी ज्यादा से ज्यादा फर्श के साथ थोड़ी–बहुत दीवारें साफ कर सकती थी। सम्राट कहते हैं, 'तब मुझे लगा कि यदि घर में और सफाई की जरूरत पड़े तो या तो आप खुद यह काम करें या फिर बाहर खड़े हो कर मजदूर की तलाश करें। जो कि इस काम के लिए प्रशिक्षित भी नहीं होगा। बस तभी मैंने तय किया कि भारत में ऐसी सफाई की सर्विस की सख्त जरूरत है। और हमने ब्रूमबर्ग कंपनी बना ली।'

इस कंपनी की शुरूआत के बाद सीखने की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है। सम्राट और ईशान ने यू टयूब पर सफाई के विडियो देखे, इंटरनेट पर सफाई के बारे में पढ़ा और मॉल जा कर सफाई के जितने भी उपकरण, साबुन, पॉलिशिंग क्रीम और तमाम चीजें खरीद लाए। यह सोच कर कि पता नहीं क्या कब काम आ जाए। फर्श को साफ करने से लेकर शीशे चमकाने तक की सारी सुविधाएं उनके पास उपलब्ध थी। इंटरनेट पर देखकर ही उन्हें पता चला कि डस्टर के कपड़े की चार तह कर सफाई करने से सफाई बेहतर होती है। इस कपड़े की तह करने का तरीका भी अलग है। शुरूआती दौर में 10 लाख रुपये का निवेश उन्होंने किया।

अब स्थिति बहुत कुछ साफ हो गई थी। क्या करना है यह दिमाग में साफ हो गया था, क्या सामान चाहिए, यह साफ तौर पर पता था, बस धूल जमी थी तो इस बात पर कि कैसे करना है। तीन महीने की भाग–दौड़ और समझ के बाद विचार पर से धूल हट कर वह चमकने लगा था। ईशान मानते हैं कि लोगों का दिमाग बनाना जरूरी था। फिर आई स्टाफ रखने की बारी जिसे ट्रेंनिंग दी जा सके और वह एक टीम की तरह काम करे। टीम बनाना ही सबसे मुश्किल काम है। ऑनलाइन प्रचार शुरू हुआ और सफाई टीम का हिस्सा बनने के लिए लोग आने लगे। सबसे जरूरी था कि इन्हें प्रशिक्षण दिया जाए और समूह का कोई भी सदस्य सफाई के काम को छोटा या दोयम दर्जे का न समझे। इसके बाद सभी सदस्यों का पुलिस सत्यापन ताकि जिनके घरों में सफाई के लिए ये लोग जाएं तो उनके प्रति घर के लोगों में अविश्वास न रहे।

इस सफाई की खासियत यह है कि जितना बड़ा घर है उस हिसाब से सदस्य जाते हैं। पूरे घर की धूल, जाले, कोने–कोने को साफ कर समान दोबारा करीने से जमाया जाता है। पंखे, झाड़फानूस, रसोई के डिब्बे, किताब की अलमारी, बेहतरीब अलमारी, शौचालय, कबूतरों की हुड़दंग से गंदी हुई बालकनी, बच्चों की चित्रकारी से रंगी दीवारें आप सब सोच कर देखिए ब्रूमबर्ग की टीम उस जगह को चकाचक कर देगी। आप चाहें तो सारा घर साफ करा लें, चाहें तो सिर्फ पंखे, अलमारी या केवल सोफे ड्राइक्लीनिंग के लिए इनकी सेवाएं ले लें। ईशान कहते हैं, महरी की सफाई और हमारी सफाई में वैसा ही अंतर है जितना एक सर्विस सेंटर और मैकेनिक का अंतर होता है। यह संवेदनशील था फिर भी जानना जरूरी था कि किसी खास वर्ग के सदस्य सफाई टीम का हिस्सा होते हैं। सम्राट–ईशान एक साथ कहते हैं, 'नहीं।' पच्चीस सदस्यों की टीम को लेकर दिल्ली के ये दोनों छोरे हर घर को साफ–सुथरा बना देना चाहते हैं।

माता-पिता की सेवा अनुपम

अबू उसमान हैरी नाम के एक प्रसिद्ध संत थे। अरब देश के खुरासान में वह रहते थे। दूर–दूर तक उनका नाम था। लोग बड़ी श्रद्धा से उनके पास आते थे और उनके सात्विक उपदेशों से लाभ उठाते थे। एक बार एक आदमी हज करने के विचार से घर से निकला। रास्ते में अबू उसमान हैरी की जगह पड़ती थी। उसने सोचा कि थोड़ा रूककर संत के दर्शन कर लेता हूं। यह सोचकर वह उनके निवास पर पहुंचा और उनको सलाम किया, लेकिन संत ने उसके सलाम का जवाब नहीं दिया। इस बात से वह आदमी दुःखी हो गया। वह कितनी श्रद्धा से उनके पास आया था और उन्होंने उसका अभिवादन भी स्वीकार नहीं किया। यह सोचकर वह हैरान था। तब संत ने कहा मां को नाराज करके हज करना अच्छा नहीं। अब उसे ध्यान आया कि उसकी मां को उसकी जरूरत थी और वह उसे रोक रही थी। जब वह नहीं माना तो वह नाराज हो गई। उसकी नाराजगी की चिंता किए बगैर वह हज करने निकल चला आया। संत की बात सुनकर वह उल्टे पैर घर लौट आया और मां की सेवा अंतिम समय तक करता रहा। मां का देहांत हो जाने के बाद जब वह उन संत के पास पहुंचा, तो उन्होंने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया और उसे अपना आशीर्वाद दिया और कहा कि दुनिया में सबसे बड़ी सेवा अपने माता–पिता की सेवा करना ही है।

— — — — — — — — — — — — — — — — — —

ckMesj dk lir d'ehj es 'kghn

जोगाराम सारण

बाड़मेर (राज.)

बाड़मेर। बाड़मेर जिले के तारातरा निवासी सेना के जवान धर्माराम जाट कष्मीर में उग्रवादियों से मुकाबले में षहीद हो गए। बेनीवाल गोत्रीय धर्माराम एक साधारण परिवार से थे। उनके पिताजी गंगाराम बेनीवाल का 6 माह पूर्व देहावसान हो गया था।

भारतीय थल सेना के जवान धर्माराम कष्मीर के अनंतनाग क्षेत्र में पेट्रोलिंग पार्टी में थे। उन्हें एक स्थान पर उग्रवादियों के छिपे होने की सूचना मिली। सेना के दल ने उग्रवादियों को घेर लिया। दो घंटे चले मुकाबले में सेना ने एक उग्रवादी को मार गिराया किन्तु भारत मां का सपूत धर्माराम बेनीवाल शहीद हो गया। उनके षव को पैतृक गांव तारातरा लाया गया, जहां सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

भारत माता के सपूत को सादर श्रद्धा सुमन।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 12.09.1989) 5'6" M. Sc Mocrobilogy & B.Ed. Avoid Gotra : Lathar, Malik, Kundu. Mob.: 9780938830
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.1991) 23.9/5'6" M.Tech. (CSE) Employed in a reputed University near Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 0172-2277177, 07696844991
- SM4 Jat Girl (DOB14.09.1991) 23.9/5'6" M.Sc. Physics from P.U. with 74% marks. Avoid Gotras: Sehrawat, Kadian, Malik. Cont.: 09815805575
- SM4 Jat Girl 23/5'3" M.Sc. Physics from MDU Rohtak with 65% marks, B.Ed. Avoid Gotras: Sehrawat, Sangwan, Malik. Cont.: 09466538100
- SM4 Jat Girl 29/5'7" MBA. M.Com. Preferred Chandigarh (Try-city) Avoid Gotras: Roperia, Kharinta, Ghanghas. Cont.: 09417350856
- SM4 Jat Girl (DOB 24.09.1990) 24.8/5'5" .B.Com. M.Com. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras:Tanwar, Jakhar, Sheoran. Cont.: 08284050424
- SM4 Jat Girl (DOB18.10.1984)30.8/5'3" M.Com. from Kurukshetra University. Doing job in Share Market, Bombay Stock Exchange Agent office in Panchkula. Brother, Elder Sister and Father in Government Job. Avoid Gotras: Malik, Kadian, Khatri. Cont.: 09468089442, 08427098277
- SM4 Jat Girl (DOB 12.09.1989) 26/5'6" M.Sc. Microbiology & B.Ed. Working as Micrologist in I.T.C.Panchkula.. Avoid Gotras: Lather, Malik, Kundu. Cont.: 09780938830
- SM4 Jat Girl, (DOB 12.05.1988) 27/5'2" M.Sc. (Microbiology) Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan. Cont.: 08146082832.
- SM4 Jat Boy (DOB 14.09.1986) 28.8/5'11". Working as Senior Engineer in MNC Noida with Rs.10 lac PA. Preferred working match. Avoid Gotras: Tanwar, Jakhar, Sheoran. Cont.: 08284050424
- SM4 Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in Vipra Co. at Banglore. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal. Cont.: 09417629666
- SM4 Jat convent educated Boy 31/5'9" Post graduate from P.U. Protocol Officer in NABARD (Govt. of India Bank) Father retired Executive from PSU Bank and sister MBBS, MD doctor. Settled around Chandigarh. Avoid Gotras: Kundu, Gahlaut, Lohan. Cont.: 09888734404
- SM4 Handsom Smart Jat Boy (DOB 27.01.1988) 6'1" B.E. M.B.A Finance from P.U. Working M.N.C. Canada (PR) now in India (Presents Gassted Officer, Agricultural Land & Rural Properties in Chandigarh, Panchkula & Rohtak Performed BE & MBA. Avoid Gotras: Phagot, Shehrawat, Rathee. Cont.: 09463969736

क्रमांक : जा0स0भ0-2015/अनुदान-41 दिनांक : 10/06/2015

विषय : मानव कल्याण के लिए विशेष अपील।

सादर प्रणाम,

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला (गैर राजनैतिक सामाजिक संस्था) मानव सेवा एवं समाज कल्याण के विभिन्न सामाजिक-कल्याणकारी कार्यक्रमों के आयोजन के लिए सदैव लग्नशील व तत्पर रहती है। इस संदर्भ में सभा की कार्यकारिणी द्वारा नेपाल, बिहार, उज़र प्रदेश में आए भंयकर भूकंप के शिकार एवं पीड़ितों को आर्थिक सहायता प्रदान करने व इस त्रासदी से बेघर हुए असंज़्य व्यक्तियों के पुनर्वास हेतू आर्थिक सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया गया है।

गत 7 जून 2015 को सभा के माननीय प्रधान का सभा के शिष्टमंडल सहित जस्टिस प्रीतमपाल, पूर्व न्यायधीश पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय व वर्तमान लोकायुक्त हरियाणा द्वारा आयोजित किए गए महायज्ञ के दौरान समारोह के मुज़्य वक्ता, स्वंय सेवी-धार्मिक संस्था (वेद विद्या शोध संस्थान) पीपली जिला कुरूक्षेत्र के संचालक स्वामी संपूर्णानंद के साथ समाज सेवा/मानवसेवा पर विचार विमर्श हुआ। यह संस्था गरीब बच्चों व बेसहारा व्यक्तियों की आर्थिक मदद करने के इलावा नेपाल में भूकंप पीड़ितों के लिए न्यूनतम कीमत पर घर बनाने का कार्य कर रही है। यज्ञ समारोह के दौरान सभा के माननीय प्रधान द्वारा जाट सभा की ओर से भूकंप पीड़ितों के लिए पुनर्वास हेतू मकान बनाने के लिए 'वेद विद्या शोध संस्थान' को फौरी तौर से एक लाख रूपये का अनुदान देने के इलावा सुझाव दिया गया कि नेपाल में भूकंप पीड़ितों के लिए आवास बनाने का कार्य जारी रखा जाए और इसके लिए जाट सभा चंडीगढ़ अपना भरपूर आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेगी। अतः इस संस्था द्वारा नेपाल में बनाए जाने वाले मकानों पर जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला का नाम अंकित होगा जिससे सभा व समाज की नेपाल देश में भी पहचान बनेगी। **इसके साथ ही जाट सभा द्वारा समय-समय पर खेलों व शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये मेधावी छात्रों व उत्कृष्ट खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार दिया जाता है और हरियाणवी संस्कृति एवं भाषा के विस्तार के लिये भी विभिन्न कलाकारों व सार्वजनिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आर्थिक अनुदान भी दिया जाता है।**

इसलिए आपसे निवेदन है कि नेपाल भूकंप त्रासदी के पीड़ितों को आर्थिक सहायता प्रदान करने व इस प्रलय के कारण बेघर हुए असंज़्य असहाय व्यक्तियों के पुनर्वास हेतू बढ़-चढ कर आर्थिक सहायता प्रदान करें। इस पुनित कार्य के लिए सभा के माननीय प्रधान द्वारा सर्वप्रथम 11 हजार रूपये का अनुदान दिया गया है। जाट सभा को अनुदान स्वरूप भेजी जाने वाली राशी नकद, सभा के एचडीएफसी बैंक बचत खाता नं0 50100023714552 (IFSC Code-HDFC0001324) में जमा करवाने के इलावा 'जाट सभा चंडीगढ़' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रेषित की जा सकती है जो कि आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है। आपसे यह भी निवेदन है कि सभा द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी हेतू आप अपना ईमेल पता इस कार्यालय को भेजें।

यह अपील जाट सभा चंडीगढ़ के प्रत्येक आजीवन सदस्य को डाक द्वारा व्यक्तिगत तौर से पहले भेजी जा चुकी है और दोबारा जाट लहर पत्रिका के माध्यम से प्रत्येक आजीवन सदस्य व आप सभी से पुनः अपील की जाती है कि समाज कल्याण के इस पुनीत कार्य के लिये यथा शीघ्र अपना भरपूर आर्थिक योगदान जाट सभा चंडीगढ़ को भेजने का कष्ट करें ।

आदर सहित।

भवदीय,
(राजकपूर मलिक)
महासचिव

जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार अखिल भारतीय आन दी स्पाट निबंध लेखन प्रतियोगिता

डा0 एम.एस.मलिक, प्रधान जाट सभा चंडीगढ़ बच्चों को प्रतियोगिता में निबन्ध का विषय बताते हुये।

सारिका मलिक, *Drugs officer Panchkula* छात्राओं को प्रतियोगिता में निबन्ध का विषय बताते हुये।

जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा मोती राम आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सैक्टर 27 चंडीगढ़ के इलावा हरियाणा रा%य के विभिन्न परीक्षा केंद्रों-चौ0 भरत सिंह यादगार खेल स्कुल, निडानी जिला जींद, भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कुल निडानी, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जुलाना जिला जींद, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शामलो कलां जिला जींद, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लजवाना कलां, जिला जींद, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गतोली जिला जींद, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल जुलाना जिला जींद, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किला जफ्रगढ़ जिला जींद, ज्ञानदीप माडल स्कुल सैक्टर 18 पंचकुला, सी एल डी ए वी पब्लिक स्कूल सैक्टर 11 पंचकुला व भवन विद्यालय सैक्टर 15 पंचकुला पर आयोजित की गई भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार अखिल भारतीय आन दी स्पाट निबंध लेखन प्रतियोगिता में हरियाणा व चंडीगढ़, मोहाली के विभिन्न कालेजों व स्कूलों के लगभग 2000 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

जाट सभा द्वारा यह प्रतियोगिता हर वर्ष सभा के प्रधान डा0 एम0एस0मलिक आईपीएस (सेवा निवृत) के दिवंगत बहु प्रतिभाशाली पुत्र की यादगार में आयोजित की जाती है जो कि स्कूलों व कालेजों के विद्यार्थियों में शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों के विस्तार के प्रति रूची उत्पन्न करने के इलावा उनको अपनी प्रतिभा तथा विवेक द्वारा लेखन कला व शैक्षणिक दक्षता का प्रदर्शन करने का अवसर भी प्रदान करती है।

सभा के प्रधान व हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक एम0एस0मलिक आईपीएस (सेवा निवृत) ने चौ0 भरत सिंह यादगार खेल स्कुल, निडानी जिला जींद व भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कुल निडानी केंद्रों पर निबंध के आन दी स्पाट विषय – 'हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में स्वास्थ्य और उसका महत्व' या 'आज के विश्व में क्या महिलाएं वास्तव में सशक्त एवं सुरक्षित हैं' या 'भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ना एक कठिन कार्य है' की घोषणा करते हुए प्रतियोगिता का शुभारंभ किया तथा मोती राम आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सैक्टर 27 चंडीगढ़ केंद्र पर श्री आर आर श्योराण पूर्व इंजीनियर इन चीफ पी डबल्यू डी (बी

'k"k i`"t &16 ij

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।